हंसती दुनिया
₹15/-
वर्ष 33
अंक 4
अप्रैल 2019

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 4 • अप्रैल 2019 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. अवतार बाणी
10. समाचार
38. क्या आप जनाते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

8. **पढ़ने की लगन**
: मदन कोथूनिया

18. **वास्तविक शिक्षा**
: ओ. पी. राजकुमार

25. **जैसी करनी वैसी भरनी**
: राधेलाल 'नवचक्र'

32. **सुबह का भूला**
: सुकीर्ति भटनागर

40. **पिता की सीख**
: डॉ. परशुराम शुक्ल

कविताएं

11. **दो बाल कविताएं**
: हरजीत निषाद्

21. **दो बाल कविताएं**
: कमल सिंह चौहान

31. **चार नन्हीं कविताएं**
: हरिकृष्ण 'हरि'

39. **दो बाल कविताएं**
: अशोक जैन

47. **वृक्षों का संवाद**
: डॉ. रामनिवास 'मानव'

विशेष/लेख

6. **बाबा गुरबचन सिंह जी के अनमोल वचन**

16. **पेड़ पर इन्सानों के घर**
: डॉ. विनोद गुप्ता

22. **चाकू मछली**
: डॉ. परशुराम शुक्ल

24. **विज्ञान प्रश्नोत्तरी**
: घमण्डीलाल अग्रवाल

28. **बेल**
: राजकुमार जैन

30. **पक्षियों को पंख संवारने से ...**
: जयेन्द्र

सबसे पहले

धैर्य रखें

साधारणत: हम जब कोई भी कार्य करते हैं तो हमारे मन में यही भाव होता है कि मैं सबसे आगे निकल जाऊँ। अक्सर, जब हम कार्य कर रहे होते हैं, वह यदा-कदा सबकी या कुछ लोगों की आंखों के सामने ही हो रहा होता है। उनमें से हमारे माता-पिता, बहन-भाई एवं गुरुजन भी होते हैं। हम अगर इनसे कुछ छुपाकर भी करना चाहें तो भी प्रकट हो ही जाता है। इस तरह माता-पिता या शिक्षक हमसे हमारे कार्य के बारे में जानकारी भी लेते हैं और अपनी ओर से दिशा-निर्देश भी देते हैं। हमारे कार्य की प्रगति के बारे में पूछते रहते हैं। कभी-कभी तो इनका बीच-बीच में रोकना, टोकना, प्रश्न पूछना, दिशा-निर्देश देना बहुत बुरा लगता है। इस तरह हम उनके व्यवहार से क्रोधित भी होते हैं, चिढ़ते भी हैं और परेशान भी होते हैं। हमें लगता है कि वे हमारी प्रगति में बाधक हैं, अवरोधक हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा होता क्यों है? ऐसा इसलिए होता है कि हम जल्दी से जल्दी अपने कार्य को बिना किसी विध्न के पूरा करना चाहते हैं और जो भी इसमें कोई अवरोध पैदा करता है तो वह चाहे हमारा शुभचिन्तक ही क्यों न हो हमें दुश्मन लगने लगता है। उस समय हमें अपना लक्ष्य अधिक महत्वपूर्ण लगता है और कुछ भी नहीं। उस समय हम अच्छी बात, सलाह या दिशा-निर्देश को सुनकर भी अनसुना कर देते हैं। वस्तुत: वह हमारे लिए और भी लाभदायक सिद्ध हो सकते थे।

प्यारे साथियों! हमें भी विचार करना है कि हमारे माता-पिता जिन्होंने हमें जन्म दिया, चलना सिखाया, प्रारम्भिक शिक्षा दी, हमें अच्छे संस्कार दिये। उन्होंने भी तो यही चाहा कि हम आगे से आगे बढ़ें, प्रगति करें, सफलता की सीढ़ी चढ़ें और अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। इसलिए हम उनके द्वारा दिए गये दिशा-निर्देशों को अवश्य सुने, उन पर विचार करें और उसका जितना हो सके सदुपयोग करें। यह हमारे कार्य को तेजी से करने और लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होंगे क्योंकि जिस गाड़ी में ब्रेक नहीं होगी वह गाड़ी कभी तेज नहीं चल सकती और उसको चलाने वाला दुर्घटना की सम्भावना से अछूता नहीं रह सकता। जब तक उसमें ब्रेक ठीक नहीं होगी। उस गाड़ी को वह सावधानी से चला भी नहीं सकता। ब्रेक ठीक होगी तो जहाँ चाहेगा वह उसको रोक सकेगा, रफ्तार को अपनी सुविधानुसार धीरे और तेज भी कर सकेगा।

इस प्रकार जीवन में भी कभी उतार-चढ़ाव आता है तो वह हमें निराश भी करता है। कभी-कभी परिणाम आशा के विपरीत भी हो सकता है। वह केवल कुछ समय के लिए हमारी प्रगति की गति को धीमा अवश्य करता है लेकिन यह भी हमें जीवन को अच्छी तरह जीने और समझने का अवसर भी प्रदान करता है।

अब परीक्षा के बाद उसका परिणाम भी आएगा। हो सकता है कोई पीछे भी रह जाए परन्तु उसको पीछे न समझकर उसको एक नई शुरुआत मानें, उचित परिश्रम करें, ध्यान से कार्य करें, धैर्य रखें और निश्चिन्त रहें कि मेहनत का परिणाम सफलता का प्रमाण अवश्य लेकर आएंगे।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 186

कहणी बहणी रहणी विच जो वक्खो वख हो जांदे ने।
दिल विच वैर विरोध ते नफरत उपरों प्यार जतांदे ने।
जानणहार प्रभु है जेहड़ा जाणे सारे गैबां नूं।
इस तों किवें लुका सकदा ए बन्दा अपणे ऐबां नूं।
दूजे नूं जो करे नसीहत आप ओह करदा कम्म नहीं।
आप खुदी तों बच नहीं सकदा छडदे खैहड़ा जम्म नहीं।
जेहड़े मन विच रहन्दा हर दम अन्तर्यामी एह निरंकार।
उस दे सुच्चे बोलां नाल ही तर सकदा ए कुल संसार।
जो वी कोई सन्तजनां दी मत्थे धूड़ी लांदा ए।
कहे अवतार ओही नर जग ते सगल पदारथ पांदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार के लोगों की बोल-चाल, उठने-बैठने, रहन-सहन और आचरण में बहुत अन्तर होता है। उसकी कथनी-करनी में अन्तर होता है। वह कहता कुछ और है जबकि उसके रहन-सहन तथा व्यवहार में कुछ और होता है। हर एक के अन्दर की बात जानने वाला यह सर्वज्ञ, सर्वव्यापी परमात्मा सबकुछ जानता है। इस प्रभु को पता होता है कि किस तरह इन्सान दिल में तो वैर-नफ़रत रखता है और ऊपर से बहुत अधिक प्यार प्रकट करता है मानो; वही उसका सबसे बड़ा शुभचिंतक हो। इन्सान भूल जाता है कि वह कितना भी यत्न कर ले अन्तर्यामी प्रभु से अपनी कमियों को छुपा नहीं सकता।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान दूसरों को तो अच्छाई और सच्चाई अपनाने की प्रेरणादायी शिक्षाएं देता है, दूसरों को नसीहत देता है और स्वयं वह काम नहीं करता जिसकी वह लोगों को शिक्षा दे रहा है। ऐसा इन्सान अभिमान से बच नहीं सकता और यमराज भी उसका पीछा करना नहीं छोड़ता। वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा ही रहता है।

इसका समाधान सुझाते हुए बाबा अवतार सिंह जी फरमाते हैं कि जिसको इस अन्तर्यामी निरंकार-प्रभु की जानकारी है और जिसके मन में यह हर पल वास करता है उसके परोपकारी सुन्दर बोल से ही यह सारा संसार भवसागर से तर सकता है अर्थात् पार-उतारा हो सकता है। इस निरंकार-प्रभु के ज्ञान के बिना माया के इस महासागर से, इस उतार-चढ़ाव और दु:ख-सुख से भरे संसार से मानव का पार-उतारा सम्भव नहीं है। बस एक ही उपाय है कि परमात्मा की जानकारी रखने वाले सन्तजनों की शरण में आकर उनकी चरणधूल मस्तक पर धारण की जाए, उनका पावन आशीर्वाद लिया जाए।

बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि संसार में जो मानव ऐसा कर्म करते हैं वे संसार के समस्त पदार्थ प्राप्त करते हैं। उनका जीवन सरल, सहज और सुन्दर बन जाता है। उनका मानव रूप में जन्म लेना सफल हो जाता है।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

★ हमारी सच्ची दौलत और सम्पत्ति हमारे बच्चे हैं। उन्हें अच्छी व सही शिक्षा देने की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसी शिक्षा से ही देश, समाज और परिवार का कल्याण हो सकता है।

★ यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सद्गुण धारण करें, उनका चरित्र व आचरण अच्छा हो, वे बड़ों का आदर करें तो ये काम पहले खुद करके दिखाने होंगे।

★ बचपन से ही बच्चों को सेवा, सुमिरण, सत्संग के साथ जोड़ने का अर्थ है– उन्हें नेक व पावन इन्सान और अच्छे नागरिक बनाना। घर में आए सन्त-महात्मा की सेवा करते समय बच्चों को आगे करो, उनके हाथों द्वारा सेवा-सत्कार करवाने चरणामृत आदि बनवाने से बच्चे भक्ति के ये दिव्य गुण सहज में ही सीख जाते हैं।

★ सादगी व मेहनत ही बच्चों को गुणवान, चरित्रवान और स्वस्थ बनाती है।

★ बच्चे समाज की नींव होते हैं। इनके पालन-पोषण व लिखाई-पढ़ाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

★ बच्चों का ध्यान दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे दिखावे और फैशन से हटाकर उन्हें स्पर्धा और परिश्रमी जीवन जीने की प्रेरणा देनी चाहिए क्योंकि आने वाले समय में न जाने उन्हें कौन-कौन सी जिम्मेदारियां निभानी पड़ जाएं। यदि बच्चे नाजुक-मिजाज बन जायेंगे तो आने वाली कठिनाइयों का सामना नहीं कर पायेंगे।

★ हमने जो कुछ करना है शुद्ध हृदय से करना है तभी हम दुनिया में परिवर्तन ला सकेंगे।

★ इन्सान अगर सही है, इन्सानियत से भरपूर है तो वह सभी धर्मों को अपना रहा है।

★ जीवन का पहला उसूल है कि हमें अभिमान को त्यागना है। अभिमान में आकर लोग कई प्रकार की बुराईयां करते हैं।

★ तन-मन-धन परमात्मा को अर्पण करके इस्तेमाल करिए तभी ये सब कुछ आपके लिए शुभ होगा।

★ जो अपने मन से बुराई को दूर कर दे, अहंकार छोड़ दे वह बिना किसी विलम्ब के महात्मा बन सकता है।

★ हमने हमेशा चेतन रहना है। बुराइयों से बचना है और भक्तों वाला जीवन जीना है।

★ पूर्ण सद्गुरु का दर सुखों का घर है। यहाँ से जो मांगो वह मिलता है।

★ संसार अपने अहम् के बल पर महान बनता है जबकि एक गुरसिख प्यार, नम्रता और मानवता के द्वारा दासों का दास बनकर महान बनता है। यही ज्ञान की सूक्ष्मता है।

★ दर-दर भटकने वाला जिसे कोई भी नहीं पूछता हो, वह सद्गुरु द्वारा अपनाए जाने पर पूजा के काबिल बन जाता है।

★ सुपुत्र (गुरसिख) वही जो पिता (सद्गुरु) की आज्ञा माने अन्यथा भले ही वह कितना ही योग्य क्यों न हो पिता (सद्गुरु) को प्यारा नहीं होता।

★ मां अपने बच्चे द्वारा फैलाई जा रही गन्दगी पर ध्यान न देकर उसे साफ कर देती है। इसी तरह हमें भी किसी की बुराइयों और अवगुणों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

★ हमें अपनी कथनी और करनी में समानता लानी है क्योंकि जिनकी कथनी करनी एक होती है वही सच्चे महात्मा हुआ करते हैं।

★ अगर हम में किसी को पानी पिलाने की शक्ति है तो वह भी प्रेमपूर्वक और श्रद्धा से पिलाना है, आडम्बर को बिल्कुल महत्व नहीं देना।

★ हमारे अन्दर 'मैं कर्ता हूँ' यह भावना कभी भी नहीं आनी चाहिए।

★ पहला उसूल है कि हमें अभिमान को त्यागना है। अभिमान में आकर लोग कई प्रकार की बुराईयां करते हैं।

★ तन-मन-धन परमात्मा को अर्पण करके इस्तेमाल करिए तभी ये सब कुछ आपके लिए शुभ होगा।

★ जो भगवान को देखकर, अंग-संग जानकर कर्म करता है वह दुनिया की तकदीर बदल सकता है।

★ दिखावे की सेवा लाभदायक नहीं होती। जितनी भी सेवा की जाए, दिल से की जाए।

★ सोच-समझकर व्यवहार करो। न किसी को धोखा दो, न किसी से धोखा खाओ।

– संकलन : हरजीत निषाद

बाल कथा : मदन कोथूनिया

पढ़ने की लगन

–मम्मी, मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा। –स्कूल से लौटते ही मनु ने सिलाई मशीन चला रही अपनी मम्मी से कहा।

–क्यों, क्या हुआ बेटा? टीचर ने डांटा है क्या?– सिलाई मशीन को रोककर मम्मी ने मनु के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

–नहीं, मम्मी! टीचर तो कुछ नहीं कहते। पर सारी क्लास के बच्चे मुझे चिढ़ाते हैं। मुझे बदसूरत कहते हैं। मेरे पास न अच्छे कपड़े हैं और न ही जूते-मौजे हैं। सब लड़के-लड़कियां अच्छे कपड़े पहनकर आते हैं। 'इंटरवल' में चॉकलेट, बिस्कुट और टाफियां मुझे दिखा-दिखाकर खाते हैं। मेरे साथ कोई खेलना नहीं चाहता। मम्मी, अब मैं घर पर ही रहा करूंगा। घर के काम में आपका हाथ बंटा दिया करूंगा।– मनु ने रोते हुए पूरी व्यथा अपनी मम्मी को सुना दी।

मनु की बातें सुनकर मम्मी का दिल भर आया। वह कहने लगी– बेटा, हम गरीब जरूर हैं लेकिन किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते। कीमती कपड़ों से कोई सुन्दर नहीं होता, असली सुन्दरता तो अच्छे गुणों और योग्यता से होती है।

थोड़ा रूककर वह फिर कहने लगी– मैं चाहती हूँ बेटा कि तुम खूब मन लगाकर पढ़ो और कक्षा में प्रथम आओ। फिर तुझे सब प्यार करेंगे, तुझे सब मान देंगे। तेरे बिना मेरा है ही कौन? तू स्कूल नहीं जाएगा तो मेरे सारे सपने चकनाचूर हो जायेंगे मनु बेटे।– कहते-कहते मम्मी की आँखों से आंसू छलक पड़े।

माँ की आँखों में आंसू देख मनु दु:खी होकर बोला– मम्मी, मुझे माफ कर दो, मैं रोज स्कूल जाऊंगा और खूब पढूंगा। तुम्हारा सपना सच होगा मम्मी।

अब मनु रोजाना खुशी-खुशी स्कूल जाने लगा। अपने साथियों के चिढ़ाने और फुसफुसाने का कोई असर उस पर अब नहीं होता था। वह समय पर काम पूरा कर लिया करता था और किसी न किसी विषय का प्रश्न अपने टीचर से पूछता रहता था। टीचर भी उसकी लगन व परिश्रम को देखकर उसे बताने में रुचि लेने लगे थे।

फलस्वरूप मासिक परीक्षाओं व टेस्टों में पूरी कक्षा में सबसे ज्यादा अंक मनु ने ही प्राप्त किये।

आठवीं की परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। मनु ने पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। समाचार पत्रों में मनु का फोटो व संक्षिप्त परिचय छपा। जिला विद्यालय निरीक्षक

ने प्रथम तीन स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत करने की घोषणा की थी।

आज मनु के स्कूल में खूब सजावट हो रही थी। अध्यापक-अध्यापिकाएं समारोह की व्यवस्था में लगे हुए थे। छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया था। सभी विद्यार्थी स्कूल के हॉल में पहुँचे हुए थे। मंच के एक ओर सजी हुई कुर्सियों पर अतिथिगण बैठ चुके थे। उन्हीं में मनु की मम्मी केली देवी भी चुपचाप बैठी थी।

तभी अचानक हॉल में जिला निरीक्षक का प्रवेश हुआ। मुख्य अतिथि की कुर्सी पर बैठते हुए जिला निरीक्षक ने हाथ जोड़कर सबको धन्यवाद दिया। मल्यार्पण और समूहगान के पश्चात् प्रथम आये हुए छात्र-छात्राओं को मंच पर बुलाया गया। उनमें मनु भी था जो अपने स्कूल का गौरवशाली प्रतिनिधित्व कर रहा था। प्रथम स्थान प्राप्त मनु का परिचय मुख्य अतिथि से कराया गया।

मुख्य अतिथि ने कुर्सी से उठकर मनु के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– कितना सुन्दर लड़का है। आगे भी खूब मन लगाकर पढ़ना।

उसके बाद मनु को प्रमाणपत्र और अगली कक्षा की पूरी पुस्तकें पुरस्कार में दी गईं। सभी छात्रों व उपस्थित लोगों ने तालियों से मनु का स्वागत किया। खुशी-खुशी समारोह सम्पन्न हुआ।

पुरस्कार की चीजें माँ को देते हुए मनु की आँखों में खुशी के आंसू छलक आए। केली देवी ने मनु को बांहों में भरकर चूमते हुए कहा– मेरा सपना कभी चकनाचूर नहीं होगा बेटा।

नये तारे की खोज

खगोल वैज्ञानिक निरंतर शोध और अनुसंधान में लगे रहते हैं। उन्होंने कई बार नये तारों की खोज की है। अब उन्होंने ब्रह्माण्ड में युवा तारे की खोज की है। चार ग्रह इसके चक्कर लगा रहे हैं।

पृथ्वी से करीब 500 प्रकाशवर्ष दूर सीआई टाउ नाम के युवा तारे की खोज हुई है। बृहस्पति और शनि के आकार के चार ग्रह इस तारे का चक्कर लगा रहे हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि पहली बार इतने विशाल तारे की खोज हुई है।

सीआई टाउ बर्फ व धूल की डिस्क से घिरा हुआ है। डिस्क को प्रोटोप्लैनेटरी डिस्क भी कहा जाता है। इसके अन्दर ही ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रह और अन्य खगोलीय पिंड विकसित होते हैं।

सीआई टाउ की एक और महत्वपूर्ण खासियत है जिसने वैज्ञानिकों को रोमांचित कर दिया है। इसका सबसे बाहरी ग्रह नजदीकी ग्रह से करीब हजार गुना दूर स्थित है। सबसे नजदीक कक्ष में बृहस्पति के बराबर आकार वाला ग्रह इसकी परिक्रमा कर रहा है। किसी युवा तारे के सबसे नजदीकी कक्ष में पहली बार इतने गर्म और विशाल ग्रह की खोज हुई है। बाहरी कक्ष में मौजूद ग्रह का भार शनि के बराबर है। सबसे नजदीकी कक्ष में मौजूद ग्रह बृहस्पति के बराबर और दूसरा उस से 10 गुना अधिक बड़ा है।

केवल एक फीसदी तारों के पास ही इतने गर्म बृहस्पति ग्रह हैं हालंकि ज्यादातर गर्म बृहस्पति सीआई टाउ के बृहस्पति से सैंकड़ों गुना अधिक बड़े होते हैं। वैज्ञानिक अब यह पता लगाने की कोशिश में हैं कि क्या यह ग्रह प्रणाली में मौजूद अन्य ग्रह बृहस्पति जैसे बड़े ग्रहों को तारों के सबसे नजदीकी कक्ष में पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं या नहीं। आगे इन ग्रहों और सीआई टाउ से जुड़ी जानकारियों के लिए भी शोध किया जाएगा।

– प्रस्तुति : डॉ. विनोद गुप्ता

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

पढ़ो लिखो विद्वान बनो

ध्यान लगाओ जोड़ो हाथ।
अपने प्रभु से कर लो बात।
पढ़ो लिखो विद्वान बनो,
ईश्वर से पा लो सौगात।

अपना पाठ पढ़ो उठकर।
काम करो आगे बढ़कर।
हर पल बहुत कीमती,
समय गंवाओ न पलभर।

समय पे जो करते तैयारी।
व्यर्थ न करते मारा मारी।
होते सफल परीक्षा में वो,
हार न मानें सब पर भारी।

शिक्षक का सम्मान जो करते।
सदा सफलता प्राप्त वो करते।
जीवन में आगे हैं बढ़ते,
सब उनका सम्मान हैं करते।

मीठे बोल

तोता बहुत बोलता लेकिन,
उसकी ऊँची नहीं उड़ान।
चुप रहती है चील सयानी,
उड़ती पर ऊँचे आसमान।।

जब भी बोलें मीठा बोलें,
बिना राग न छेड़ें तान।
जो कुछ बोलें तोल के बोलें,
वरना कहलाएं नादान।।

कोयल मीठे बोल बोलती,
पाती वह सबका सम्मान।
काँव-काँव कौआ करता है,
कोई न सुनता उसका गान।।

जो बच्चे कटु वचन बोलते,
उनका संग दुखों की खान।
अच्छे गुण ही अपनाएं हम,
बन जाएंगे नेक महान।।

सदा प्यार से शीश झुकाएं,
मात-पिता-गुरु ईश समान।
इनके वचन मानते जायें,
हो जाये हर काम आसान।।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

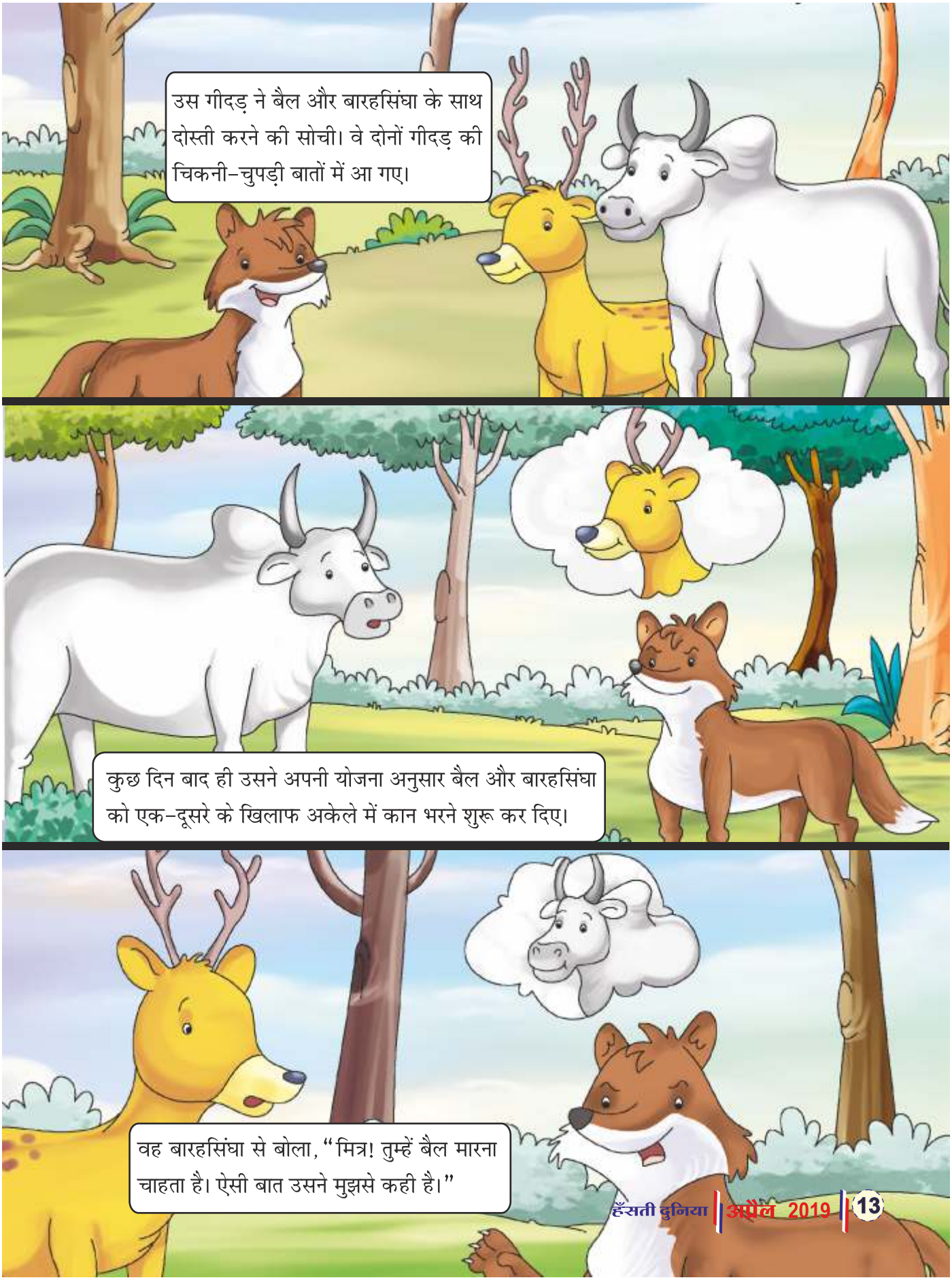
उस गीदड़ ने बैल और बारहसिंघा के साथ दोस्ती करने की सोची। वे दोनों गीदड़ की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गए।
कुछ दिन बाद ही उसने अपनी योजना अनुसार बैल और बारहसिंघा को एक-दूसरे के खिलाफ अकेले में कान भरने शुरू कर दिए।
वह बारहसिंघा से बोला, "मित्र! तुम्हें बैल मारना चाहता है। ऐसी बात उसने मुझसे कही है।"

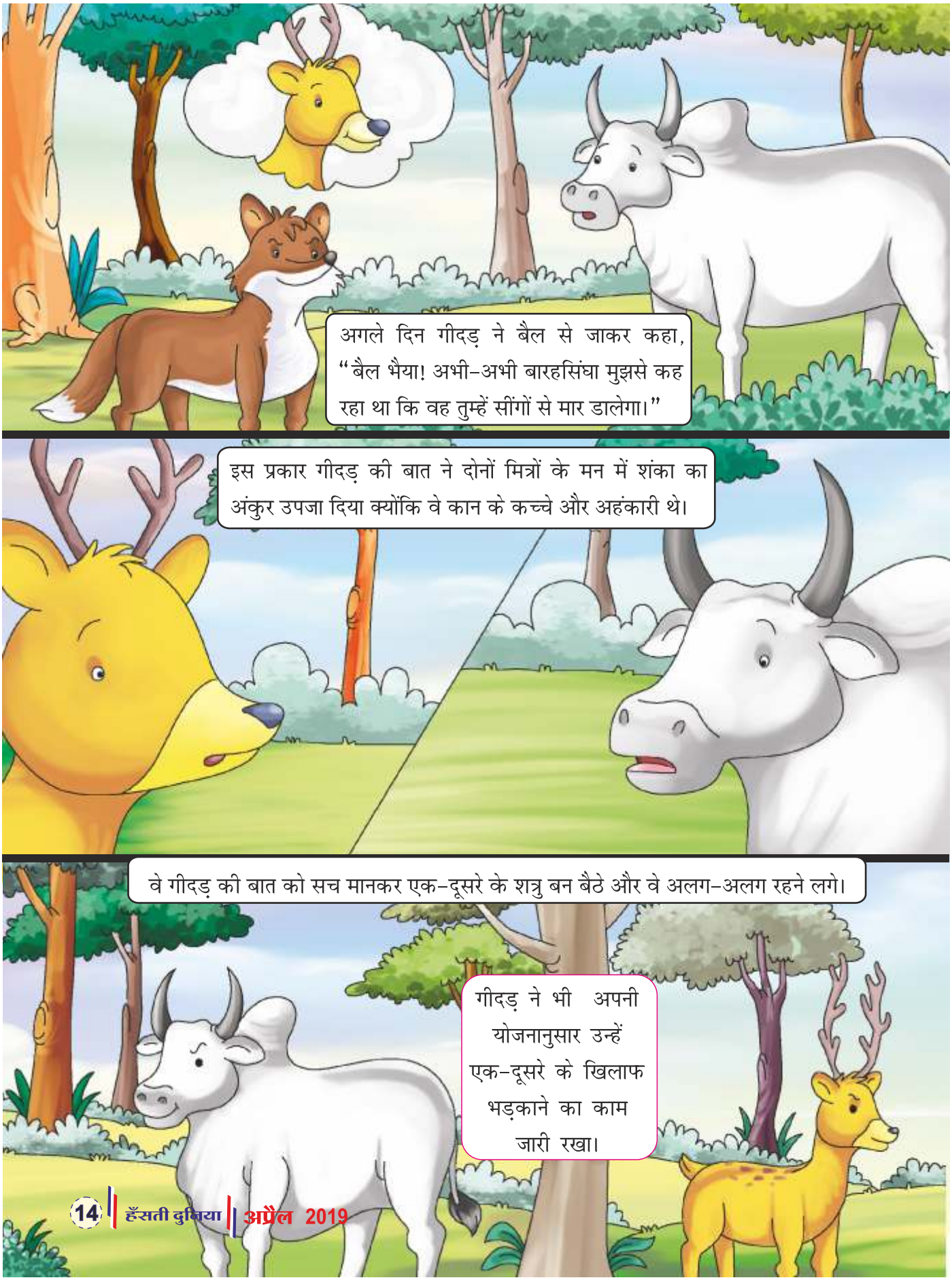
अगले दिन गीदड़ ने बैल से जाकर कहा, "बैल भैया! अभी-अभी बारहसिंघा मुझसे कह रहा था कि वह तुम्हें सींगों से मार डालेगा।"
इस प्रकार गीदड़ की बात ने दोनों मित्रों के मन में शंका का अंकुर उपजा दिया क्योंकि वे कान के कच्चे और अहंकारी थे।
वे गीदड़ की बात को सच मानकर एक-दूसरे के शत्रु बन बैठे और वे अलग-अलग रहने लगे।
गीदड़ ने भी अपनी योजनानुसार उन्हें एक-दूसरे के खिलाफ भड़काने का काम जारी रखा।

अचानक एक दिन वे दोनों गुस्से में आमने-सामने आ गये और गीदड़ ने देखा कि बैल और बारहसिंघा लड़ने के लिए मैदान में उतर आए हैं।
वह उनकी लड़ाई देखने के लिए एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया।

वे दोनों लड़ते-लड़ते लहुलुहान होकर गिर गये।

धोखेबाज गीदड़ ने इस मौके का फायदा उठाया और उसने दोनों का अन्त करा दिया।
शिक्षा : तीसरे की कुटिलता दो दोस्तों में दुश्मनी पैदा कर देती है इसलिए दोस्ती सोच-परख कर ही करनी चाहिए।

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

पेड़ पर इन्सानों के घर

मानव जाति के आदिपूर्वज अपना अधिकांश समय पेड़ों पर बिताते थे। एक नये शोध में कहा गया है कि जब तक इन्सान पूरी तरह पैरों पर चलने के काबिल नहीं हो गया, वह ज्यादातर समय पेड़ों पर ही बिताता था। 33 लाख साल पहले पूर्वी अफ्रीका में मृत एक तीन साल की बच्ची के अवशेषों के अध्ययन से यह बात सामने आई है।

'द इंडिपेंडेट' की रिपोर्ट के अनुसार, इस खोज से लम्बे समय से चली आ रही इस बहस का अन्त हो गया है कि दो पैरों वाला मानव पूर्वज भी क्या वानरों की तरह पेड़ों पर चढ़ सकता था। अवशेष 'सीलम' के हाथों के जोड़ों और कंधे की हड्डी के जीवाश्मों से संकेत मिलते हैं कि बच्ची और उसका परिवार आधुनिक वानरों की तरह पेड़ों पर चढ़ता था, हालांकि बच्ची के शरीर का निचला हिस्सा दो पैरों पर चलने के लिए विकसित हो चुका था। इसका मतलब है कि मानव के शुरुआती पूर्वज क्रम विकास में अब तक की हमारी मान्यता से काफी पहले वृक्षीय अस्तित्व से मुक्त हो चुके थे। 'सीलम' अस्ट्रालॉप्थीकस नस्ल का बहुत सुरक्षित जीवाश्म है। उसकी करीब पूरी खोपड़ी और अस्थि-पंजर सैंड स्टोन में मिला है। ये इथोपिया के डिक्का क्षेत्र में सन् 2000 में मिला था।

पेड़ के ऊपर मकान। हो रहा है न आश्चर्य? जी हाँ, यह सच है। धरती पर फैलते जा रहे कंकरीट सीमेन्ट के जंगल से शायद एक दिन ऐसा भी आए जब इन्सान को जमीन पर अपना एक न्यारा बंगला बनाने को तरसना पड़े। कुछ ऐसी ही परिकल्पना से रूबरू कराने में लगे हैं जयपुर के के. पी. सिंह जो पेशे से सिविल इंजीनियर हैं। शहर से सटे सुखेर औद्योगिक क्षेत्र के पीछे चित्रकुट नगर के पास रामनगर है। यहाँ कभी रामबाड़ी नाम से कभी अमरूद बाड़ी जानी जाती थी, जो आज केवल एक खेत के रूप में रह गई है। इसी खेत में कुछ छोटे-बड़े आम के पेड़ हैं। इन्हीं में से एक मोटे तने वाले घने पेड़ में यह तीन मंजिला मकान पेड़ की सघन शाखाओं और टहनियों की वजह से हरे रंग की दीवारों वाला यह मकान हालांकि यह दूर से दिखाई नहीं देगा, लेकिन जैसे-तैसे पास आते हैं, आंखें फटी रह जाती हैं। यह देखकर सुनकर तो घोर आश्चर्य होता है कि मकान का निर्माण आम के विशालकाय पेड़ के तने पर। इसको कुछ इस तरह से तैयार किया है कि किसी भी टहनी को नुकसान न पहुँचे और बन जाए बंगला न्यारा-सा। के. पी. सिंह ने इस मकान को तैयार करवाने के लिए ईंट-पत्थर का प्रयोग नहीं किया है, बल्कि लकड़ी व सीमेंट की शीट्स एवं

लोहे की एंगलों को काम में लिया है। कमरें, रसोई, शौचालयों व स्नानघर वाले इस मकान में वे सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो आमतौर पर किसी मकान में होनी चाहिए। अगर भीतर मन नहीं लगे तो इसमें बालकनी का निर्माण भी किया है जहाँ खड़े होकर हरे-भरे खेतों को निहार सकते हैं। इस मकान को तैयार होने में करीब तीन लाख रुपये खर्च आया है।

इसी तरह राजस्थान में उदयपुर के चित्रकुट में एक ऐसा ही ट्री बनाया गया है, जिसके लिए पेड़ की एक भी शाखा नहीं काटी गई है। इस घर में ड्राइंगरूम में बैठने के लिए इस पेड़ की शाखाओं का ही प्रयोग किया गया है। 65 वर्ष पुराने आम के पेड़ पर बना यह घर 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस' में शामिल किया गया है। इंजीनियर के. पी. सिंह बताते हैं कि 1999 में उन्होंने बनाना शुरू किया था। इसमें पेड़ की शाखा को काटे बगैर कमरे बनाए गए हैं। ऐसी किसी भी वस्तु का प्रयोग नहीं किया गया है, जिसके लिए पेड़ को काटना पड़ा हो। सिंह ने बताया कि विभिन्न पदार्थों पर शोध कर लकड़ी की आयरन तथा फर्श के लिए पत्थर टाइल्स के बजाय सोल्यूलोस शीट का प्रयोग किया गया है। हवा के साथ पेड़ को झूमने और उसके विकास की प्राकृतिक आजादी को ध्यान में रखते हुए घर के साढ़े छह टन भार को पेड़ के मुख्य तने के साथ लोहे के तीन खम्बों के सहारे बांटा गया है। हवा के दबाव व दिशा को ध्यान में रखते हुए मकान के दक्षिणी पश्चिमी भाग को एयरोडायनामिक बनाया गया है। खिड़की के कांच को टूटने से बचाने के लिए फाइबर शीट लगाई गई है।

जानकारी : विभा वर्मा

दवाई से कम नहीं पानी

बच्चों, क्या तुम महसूस किये हो कि मानव, पशु-पक्षी भोजन के बिना तो कुछ समय के लिए जीवित रह सकते हैं पर पानी के बिना अधिक समय तक तो कतई नहीं जी सकते।

दिन शुरू होते ही प्रात: से ही जल की आवश्यकता शुरू हो जाती है।

भोजन के तुरन्त बाद जल नहीं पीना चाहिए। नहीं तो शरीर मोटा हो जाता है और न ही भोजन के शुरू में ही जल का सेवन करें। इससे भोजन का पाचक रस पतला हो जाता है। उचित समय आधा भोजन के बीच में दो-तीन घूंट जल पीना ठीक रहता है। अत: भोजन के प्रारम्भ में और न ही अन्त में अधिक जल पीना चाहिए क्योंकि ऐसे अगर जल लिया जाए तो स्वास्थ्य के विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि अत्यधिक मात्रा में पानी लिया जाए तो भोजन जल के मिश्रण से कीचड़ सदृश्य रूप ले लेता है और ऐसी स्थिति में आमाशय में पहुँचने वाला पित्ताशय से पाचक रसों का प्रभाव भोजन पर सुचारु रूप से नहीं होता। जिससे पाचन क्रिया बिगड़ जाती है और बदहजमी, गैस सम्बन्धी विकारों का जन्म हो जाता है।

कहानी : ओ. पी. राजकुमार

वास्तविक शिक्षा

गीतेन्द्र बाजार से सामान खरीदकर अपने घर लौटा। मन ही मन वह बहुत खुश हो रहा था। वह अपने दिल में सोच रहा था।– जब उसकी मम्मी को यह मालूम होगा कि उनका बेटा मुफ्त में ही सामान खरीदकर लाया है तो वे खुशी से झूम उठेंगी और उसकी चतुराई के लिए उसे शाबाशी देगीं। यह सोच-सोचकर वह खुशी से मुस्कुरा रहा था।

–ले आए सामान?– घर पर पहुँचते ही उसकी मम्मी ने उससे पूछा तो वह खुशी से मुस्कुराते हुए उनसे बोला– मम्मी! आपका बेटा सामान भी ले आया और आपका दिया हुआ यह पचास रुपये का नोट भी।

–वो कैसे?– सुनकर उसकी मम्मी ने आश्चर्यचकित होकर उससे पूछा।

–वह बोला– मुझे सामान देने के बाद दुकानदार दूसरे ग्राहकों को सामान देने लग गया था। उसे पचास रुपये का अपना नोट मैंने पहले ही दे दिया था। अपने बचे हुए दो रुपये उससे लेने के लिए मैं दुकान पर खड़ा हुआ था। उसने सोचा कि मैंने उसे सौ रुपये का नोट दिया था। यह सोचकर उसने उन दो रुपये के साथ मुझे यह पचास रुपये का नोट भी लौटा दिया।

यह कहकर गीतेन्द्र अपनी इस चतुराई पर गर्व से मुस्कुराते हुए अपनी मम्मी की ओर देखने लगा। उसकी मम्मी बोली– उस समय तुम्हें यह डर नहीं लगा कि कहीं दुकानदार को याद न आ जाए कि तुमने तो उसे पचास रुपये का ही नोट दिया था?

–मुझे डर तो लगा था मम्मी! मुझे तो अब भी डर लग रहा है कि कहीं उसे यह याद न आ जाए। अगर उसे यह याद आ गया तो वह हमारे घर पर भी आ सकता है।– गीतेन्द्र ने अपनी मम्मी के प्रश्न का जवाब दिया।

उसकी मम्मी उससे बोली– अगर उसे यह याद आ गया तो इससे हमारी कितनी बदनामी होगी? सभी लोग हमें बेईमान और धोखेबाज समझकर हमसे घृणा करेंगे बेटे।

यह सुनकर गीतेन्द्र उनसे बोला–

–जाओ! दरवाजा खोलकर देखो कि कौन आया है? उसकी मम्मी ने उससे कहा तो वह बोला– मुझे तो डर लग रहा है मम्मी। आप ही देखिए।

उसकी मम्मी ने दरवाजा खोला तो वहाँ पर पुलिस के सिपाही को देखकर गीतेन्द्र डर गया। उसने सोचा।– शायद दुकानदार ने ही उसे पकड़वाने के लिए सिपाही को उसके घर पर भिजवाया है। यह सोचकर वह डरते हुए अपने कमरे में जाकर छुप गया।

–बेटे, देखो तुमसे ये क्या कह रहे हैं?– उसकी मम्मी ने उसके कमरे में जाकर उससे कहा।

–अरे कहाँ छुप गये तुम?– सिपाही ने गीतेन्द्र से कहा तो वह बुरी तरह से डर गया। उसकी मम्मी ने जब उसकी यह हालत देखी तो वे उससे बोली– बेटे! ये तो तुम्हारे पापा के दोस्त हैं।

–मुझे तो पुलिस से डर लगता है मम्मी।– सुनकर गीतेन्द्र ने डरते हुए कहा।

मम्मी बोली– बुरा काम करने पर डर ही लगता है बेटे। अच्छे काम करने वाले लोग निर्भय होकर रहते हैं। उन्हें कभी किसी से डर नहीं लगता।

–तुम्हारी मम्मी ठीक कह रही है बेटे।– कहकर सिपाही वहाँ से चला गया तो गीतेन्द्र अपनी मम्मी के पास आ गया। उसे डरते हुए देखकर उसकी मम्मी उससे बोली– चलो उस दुकानदार के पास चलते हैं।

उसके पास जाकर उसे उसके पचास रुपये वापस देते हैं। तभी तुम्हारा यह डर दूर होगा।

—हाँ मम्मी चलो।— गीतेन्द्र ने उनसे कहा और फिर वह उनके साथ उस दुकानदार के पास चला गया। उसकी दुकान पर पहुँचकर जब उसकी मम्मी ने उसे अपने बेटे गीतेन्द्र की ये बातें बतायीं तो उन्हें सुनकर दुकानदार उनसे बोला— आपने अपने बच्चे को ऐसी सीख देकर मेरी भी आँखें खोल दी हैं। बहन जी! मैं भी जब अपनी दुकान की चीजों में मिलावट करके उन्हें बेचता हूँ तो मुझे भी हमेशा यही डर लगा रहता है कि कहीं मैं पकड़ा न जाऊँ। अब मैं भी न तो अपनी दुकान की चीजों में कभी मिलावट करूंगा और न ही उनकी काला-बाजारी करके उन पर अधिक लाभ कमाऊँगा।

सुनकर गीतेन्द्र के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी। उसे मुस्कुराते हुए देखकर दुकानदार उसकी मम्मी से बोला— बहन जी, देश के सभी लोग आपकी ही तरह से अपने बच्चों को ऐसी ही सीख दें तो उनके बच्चे अपने जीवन में कभी कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे उनकी बदनामी होकर उन्हें अपमानित होना पड़े।— कहकर दुकानदार गीतेन्द्र से बोला— बेटा, बुरे और अनुचित काम करने वाले लोग अपने अपराधबोध से हमेशा डरते रहते हैं। इसलिए हमें हमेशा उचित और अच्छे काम करने चाहिए।

सुनकर गीतेन्द्र की मम्मी उससे बोली— दूसरों को धोखा देकर हम उन्हें नहीं बल्कि स्वयं को धोखा देते हैं। भगवान भी हमें हमारे बुरे कर्मों की सजा देते हैं।

—मम्मी! अब मैं कभी किसी को धोखा नहीं दूंगा और न ही कभी कोई ऐसा काम करूंगा जिसके कारण मुझे आज की तरह डरना पड़े। मैं हमेशा अच्छे और उचित काम करके निडर होकर रहूंगा।— सुनकर उसकी मम्मी खुशी से मुस्कुरा उठी थीं।

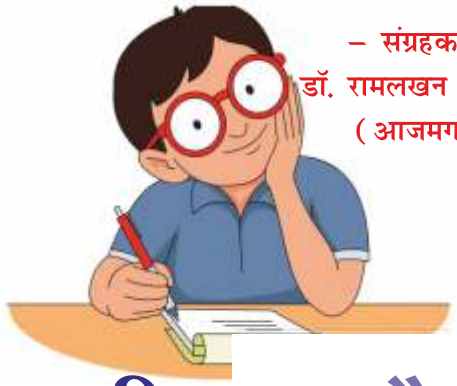

– संग्रहकर्ता :
डॉ. रामलखन निरंकारी
(आजमगढ़)

आविष्कार और आविष्कारक

★ टाइपराइटर का आविष्कार शोल्स ने किया था।
★ थर्मस फ्लास्क का आविष्कार डेवर ने किया था।
★ पनडुब्बी का आविष्कार बुशनेल ने किया था।
★ सेफ्टीरेजर का आविष्कार जिलेट ने किया था।
★ विद्युत बल्ब का आविष्कार एडिसन ने किया था।
★ मशीनगन का आविष्कार पुकल ने किया था।
★ ट्रांजिस्टर का आविष्कार शॉकले ने किया था।
★ कम्प्यूटर का आविष्कार बैबेज ने किया था।
★ लिफ्ट का आविष्कार ओटिस ने किया था।
★ मिलिटरी टैंक का आविष्कार स्विटन ने किया था।
★ रेल इंजन का आविष्कार स्टीफेंसन ने किया था।
★ सिलाई मशीन का आविष्कार एलियास हॉवे ने किया था।
★ प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार जॉन गुटेनबर्ग ने 1450 में जर्मनी में किया था।

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

हमारे आसपास

आसमान में खिलते तारे,
धरती पर हैं बच्चे प्यारे।
तारे पहुँच से दूर हैं देखो,
आस पास हैं बच्चे सारे।।

चंदा भी तो चमक दिखाता,
धरती पर चांदनी फैलाता।
इनसे सीखो प्रेम बांटना,
सचमुच में ये कितने न्यारे।।

सूरज भी आता जाता है,
सबसे हिल मिलकर गाता है।
नहीं कभी ये भेद सिखाता,
कुदरत के हैं ये नजारे।।

पानी बहता वायु चलती,
सारी दुनिया इन पर पलती।
इनसे सीखो सबसे मिलना,
बन जाओगे राज दुलारे।।

पर्यावरण और बच्चे

महकते फूल चहकते बच्चे,
दिल से होते पूरे सच्चे।
भेद न कभी किसी से करते,
होते नहीं ये मन के कच्चे।।

पौधों जैसे बढ़ते रहते,
घर आंगन चहकते रहते।
देश की है शान निराली,
भावों में ये होते कच्चे।।

प्रार्थना और इबादत पूंजी,
शाला में किलकारी गूंजी।
विद्या मंदिर इनसे सजते,
क्यारी के ये फूल हैं बच्चे।।

प्रेम के भूखे झूठ नहीं है,
दगाबाज के ठूंठ नहीं है।
हरियाली से खुशहाली है,
शुद्ध पर्यावरण में पलते बच्चे।

जीव-जन्तु (लेख) : परशुराम शुक्ल

एक्वेरियम की लोकप्रिय मछली : चाकू मछली

चाकू मछली ताजे पानी की एक विलक्षण मछली है। अंग्रेजी में इसे 'नाइफ फिश' कहते हैं। चाकू मछली की पूंछ चाकू की तरह होती है, अत: इसे यह नाम दिया गया है। चाकू मछली दक्षिणी तथा दक्षिणी-पूर्वी एशिया में और अफ्रीका में पायी जाती है। चाकू मछली धीमी गति से बहने वाली नदियों में तथा ऐसे स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती है, जहाँ जलीय पौधे हों और पानी का बहाव कम हो। चाकू मछली बड़ी शानदार तैराक होती है। यह पानी की धारा के विपरीत भी तैर सकती है। चाकू मछली पानी की धारा के विपरीत तैरते समय अपने शरीर को कड़ा बना लेती है। इससे इसे तैरने में सुविधा रहती है।

चाकू मछली की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह ऐसे पानी में भी रह सकती है जिसमें ऑक्सीजन की मात्रा बहुत कम हो। चाकू मछली के शरीर में एक छोटा-सा स्विम ब्लेडर होता है। यह समय-समय पर पानी की सतह पर आती है और अपने स्विम ब्लेडर में ताजी हवा भरती है तथा पुन: पानी के भीतर लौट जाती है। इसके स्विम ब्लेडर के भीतर भरी हुई हवा की ऑक्सीजन पानी की ऑक्सीजन की कमी को पूरा कर देती है। इसीलिए इसे कम ऑक्सीजन के पानी में रहने में कोई असुविधा नहीं होती है।

चाकू मछली की गणना एक्वेरियम की सर्वाधिक लोकप्रिय मछलियों में की जाती है। इसके नितम्ब का मीनपंख पतला होता है। इसी की सहायता से यह पानी में अपना शरीर लहराते हुए तैरती है। चाकू मछली एक्वेरियम में कम प्रकाश वाले छायादार स्थान पर रहती है और ऐसे स्थानों से बचती है, जहाँ तेज प्रकाश हो।

चाकू मछली की शारीरिक संरचना ताजे पानी की मछलियों से पूरी तरह भिन्न होती है। इसका शरीर पतला और चौड़ा होता है तथा यह अगल-बगल से बहुत अधिक चपटी होती है। चाकू मछली के शरीर के किनारे ब्लेड जैसे होते हैं। इसकी पूंछ लम्बी होती है और पूंछ का सिरा नुकीला होता है।

चाकू मछली एक छोटी मछली है। इसके शरीर की लम्बाई 15 सेंटीमीटर से लेकर 30 सेंटीमीटर तक होती है किन्तु कभी-कभी इससे कुछ अधिक लम्बी चाकू मछलियां भी देखने को मिल जाती हैं। चाकू मछली के शरीर के रंग अधिक आकर्षक नहीं होते। इसकी पीठ और शरीर के ऊपर का भाग हल्के कत्थई रंग का होता है तथा पेट और शरीर के नीचे का भाग इससे भी हल्के रंग का होता है। चाकू मछली के शरीर के सभी मीनपंख बहुत छोटे होते हैं किन्तु नितम्ब का मीनपंख काफी बड़ा और लम्बा होता है। यह शरीर के मध्य भाग से आरम्भ होता है और पूंछ के पास तक चला जाता है। चाकू मछली की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह नदियों और तालाबों के कम ऑक्सीजन वाले पानी में भी सरलता से रह सकती है। यह समय-समय पर पानी की सतह पर आती है और अपने गलफड़ों के पास के स्विम ब्लेडर में हवा भर लेती है। इसके बाद यह पानी के भीतर चली जाती है। चाकू मछली अपने गलफड़ों से भी सांस लेती है। इसके साथ ही यह अपने गलफड़ों के पास के खाली स्थान में भरी हुई हवा का भी उपयोग करती है। इस प्रकार यह पानी

के ऑक्सीजन की कमी को पूरा कर लेती है तथा कम ऑक्सीजन वाले पानी में भी सरलता से रह लेती है। चाकू मछली की दूसरी विशेषता यह है कि यह हवा से ऑक्सीजन लेने के बाद कार्बन-डाईऑक्साइड युक्त हवा अपने पेट, आंतों और मलद्वार से बाहर निकालती है। चाकू मछली के शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंग पाचन तंत्र के अंग तथा पेट में पाये जाने वाले अन्य अंग इसके सिर के पीछे के एक छोटे से भाग में होते हैं।

चाकू मछली सर्वभक्षी मछली है। यह नदियों और तालाबों के ताजे पानी में पाये जाने वाले जीव-जन्तुओं से लेकर जलीय पौधे तक खाती है। चाकू मछली दिन के समय ताजे पानी के पौधों के मध्य छिपी रहती है और अंधेरा होने के कुछ समय पूर्व ही भोजन की तलाश में निकलती है। यह बड़ी पेटू होती है और शाम से लेकर अगले दिन प्रात:काल होने तक भोजन करती है। चाकू मछली का प्रमुख भोजन पानी के पिस्सू की तरह के छोटे-छोटे मछलियों का भी शिकार करती है। प्राकृतिक अवस्था में चाकू मछली को जलीय पौधे खाते हुए देखा जा सकता है।

चाकू मछली एक्वेरियम में भी प्राकृतिक अवस्था के समान ही भोजन करती है। एक्वेरियम में इसे पानी के पिस्सू और कृमि जैसे अरीढ़कारी जीवों के मांस के छोटे-छोटे टुकड़े भी खाने के लिए दिये जाते हैं, जिन्हें यह बड़े स्वाद से खाती है। एक्वेरियम में रहने वाली चाकू मछलियों का सर्वोत्तम भोजन छोटे-छोटे जीव-जन्तु तथा मांस के टुकड़े माना जाता है। इससे इनका सर्वोत्तम विकास होता है तथा ये निरोग रहती हैं।

चाकू मछली के शरीर में अनेक विलक्षण क्षमताएं होती हैं। इसकी पूंछ यदि कट जाये अथवा इसके शरीर से अलग कर दी जाये तो यह पुन: निकल आती है। एक्वेरियम में चाकू मछलियों की लहराती हुई पूंछ प्राय: अन्य मछलियां काट लेती हैं। ऐसा होने पर तीन दिन के भीतर कटी हुई पूंछ के स्थान पर नयी पूंछ निकलना आरम्भ हो जाती है।

चाकू मछली को एक्वेरियम में रखना और पालतू बनाना बड़ा आसान है किन्तु इसे रखने के लिए बहुत बड़ा एक्वेरियम चाहिए। इसके साथ ही एक्वेरियम में बहुत जलीय पौधे भी होने चाहिएं जिनमें यह छिप सके और प्राकृतिक अवस्था का आनन्द ले सके।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : तुम तैरने के लिए पानी में सिर या पैर के बल ही छलांग क्यों लगाते हो?

उत्तर : जब कोई वस्तु द्रव में डाली जाती है तो द्रव उस वस्तु पर ऊपर की ओर उत्प्लावन-बल लगाता है। अत: जब तुम सिर या पैर के बल पानी में छलांग लगाते हो तो पानी का उत्प्लावन-बल तुम्हारे सिर या पैरों पर ही ऊपर की ओर बल लगता है। यदि तुम पानी के समानान्तर छलांग लगाओगे तो यह बल शरीर पर लगेगा जिससे शरीर को चोट लगने की सम्भावना रहती है।

प्रश्न : बर्फ पानी में क्यों तैरती है?

उत्तर : बर्फ तो ठोस होती है फिर भी वह पानी में तैरती है। है न अजीब बात! तो आज यह जान लो कि ऐसा क्यों होता है भला? दरअसल, पानी का घनत्व अधिक होता है और बर्फ का घनत्व पानी से कम। जब बर्फ को पानी में डाला जाता है तो वह कुछ पानी हटाती है। इस पानी के आयतन का भार बर्फ के भार से अधिक होता है। हाँ, इसी वजह से बर्फ पानी में तैरती है।

प्रश्न : गर्म चाय या गर्म दूध डालने से कभी-कभी कांच का गिलास क्यों टूट जाता है?

उत्तर : जब तुम गिलास में गर्म चाय या दूध डालते हो तो गिलास का भीतरी तल ऊष्मा ग्रहण करके फैल जाता है। इसके विपरीत गिलास के बाहर के भाग का ताप भीतरी भाग से कम होने के कारण उसमें फैलाव नहीं या कम होता है। दोनों तलों में ताप के इस अन्तर के कारण ही कभी-कभी कांच का गिलास गर्म चाय या गर्म दूध डालने से टूट जाता है।

प्रश्न : रेगिस्तान में ऊँट आसानी से क्यों चल लेता है?

उत्तर : सामान्य रास्तों के अतिरिक्त ऊँट रेतीले रेगिस्तान में भी आसानी से चल लेता है। जानते हो क्यों? दरअसल, ऊँट के पैर नीचे से सपाट और चौड़े होते हैं। इसी वजह से जमीन पर प्रभावित क्षेत्रफल भी बढ़ जाता है तथा दबाव कम हो जाता है। दबाव के कम हो जाने से ही ऊँट ऊबड़-खाबड़ रास्तों के साथ-साथ रेगिस्तान की रेत पर भी उतनी ही सुगमता से चलने में सफल रहता है।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

जैसी करनी वैसी भरनी

किसी शहर में दो व्यक्ति रहते थे। एक धर्मबुद्धि और दूसरा पापबुद्धि। एक दिन पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि से कहा– हम लोग किसी दूसरे शहर में चलें। वहाँ घूम-फिर कर कोई कारोबार करेंगे, धन कमाएंगे। एक ही जगह बैठे रहकर हम अमीर नहीं बन सकते।

–ठीक कहते हो भाई– धर्मबुद्धि को पापबुद्धि की बात जच गयी। वह फिर बोला– मैं तैयार हूँ। सचमुच एक जगह बैठे रहकर जीवन बेकार हो रहा है।

–बिना बाहर गए हम कुछ सीख भी नहीं सकते। अनुभवहीन रह जाएंगे।– पापबुद्धि ने कहा।

–बिल्कुल।– धर्मबुद्धि ने हामी भरी।

फिर क्या था, दोनों एक दिन परदेस के लिए निकल पड़े। परदेस में दोनो ने कारोबार करना शुरू कर दिया। खूब मेहनत की। अच्छा-खासा धन कमाया। यह धन कमाने में धर्मबुद्धि का ज्यादा हाथ था।

परदेस में जब बहुत दिन हो गए तो एक दिन दोनों के मन में घर लौटने का विचार उत्पन्न हुआ। झट दोनों इसके लिए तैयार हो गए अगले दिन वे घर के लिए चल दिये।

जब दोनों अपने शहर के करीब आ पहुँचे तो पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि से कहा– मेरी एक बात मानोगे?

–जरूर, कहो न।

–हमारे पास काफी धन है। इतना धन लेकर घर जाना ठीक नहीं है।

–क्यों?– धर्मबुद्धि ने पूछा।

–हमारे धन कमाने की चर्चा धीरे-धीरे चारों ओर फैल जाएगी। नतीजा यह होगा कि सगे-सम्बन्धी और मित्रगण आकर हमसे धन की मांग करेंगे। चोरी डकैती भी हो सकती है। हमारी परेशानी बढ़ जाएगी।– पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को समझाया।

पापबुद्धि शरीर में बड़ा व झगड़ालू भी था इसलिये धर्मबुद्धि ने पापबुद्धि की बात डरकर मान ली। उसने पूछा– फिर हम इतने धन का क्या करेंगे?

–अभी हम शहर के बाहर हैं। यहाँ घना जंगल है। क्यों न किसी पेड़ के आस-पास गड्ढा खोदकर उसमें हम अपना अर्जित अधिकांश धन छिपाकर रख दें। थोड़ा-सा अपने साथ लेते चलें।– पापबुद्धि ने आगे कहा और जब-जब हमें धन की जरूरत होगी यहाँ आकर ले जाएंगे।

–सही कहते हो।– धर्मबुद्धि ने पापबुद्धि की बात सुनकर उसका समर्थन किया।

एक पेड़ के पास गड्ढ़ा खोदकर दोनों ने उसमें अपना अधिकांश धन छिपाकर रख दिया। फिर गड्ढे को अच्छी तरह ढक दिया। थोड़ा-सा धन लेकर वे घर पहुँचे।

कुछ दिनों के बाद पापबुद्धि के मन में पाप आ गया। एक दिन वह अकेले ही जंगल गया और गड़ा हुआ सारा धन घर ले आया। धर्मबुद्धि को इसकी भनक भी नहीं होने दी।

थोड़े दिन और गुजरे। एक दिन पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि से कहा– हमारे पास अब धन की कमी हो गयी है क्यों न जंगल जाकर गड़ा हुआ कुछ धन ले आएं।

धर्मबुद्धि मान गया। दोनों शहर के बाहर जंगल में जा पहुँचे। पापबुद्धि ने जहाँ धन छिपाकर रखा था, गड्ढा खोदा मगर वहाँ कुछ नहीं मिला। अब वह धर्मबुद्धि पर क्रोधित हो उठा।– जिस समय हमने यहाँ धन छिपाकर रखा था यहाँ मेरे अलावा सिर्फ तुम ही थे। तीसरा कोई भी नहीं था। अवश्य ही किसी दिन आकर यहाँ सारा धन तुम ले गए हो। अपने हिस्से के साथ मेरा हिस्सा भी ले गए। तुम धोखेबाज हो।

–सच मानो, मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है।– धर्मबुद्धि बोला। मगर पापबुद्धि ने उसकी एक न सुनी। भला चाहते हो तो मेरा हिस्सा लौटा दो नहीं तो मैं पंचायत में फरियाद करूंगा।

–जब मैंने धन लिया ही नहीं है तो कहाँ से दूँ?– धर्मबुद्धि ने साफ कहा। जीवन में मैंने कभी किसी के साथ धोखेबाजी नहीं की है और न झूठ बोला है।

परन्तु पापबुद्धि पर धर्मबुद्धि की बात का कोई असर नहीं हुआ। उसने पंचायत में फरियाद कर दी। न्यायाधीश ने दोनों पक्षों की सारी बातें ध्यान से सुनी फिर कहा– ठीक है, कल हम लोग उस पेड़ के पास जाएंगे, पेड़ से गवाही लेकर सच्चाई का पता लगाएंगे।

अगले दिन न्यायाधीश के साथ पंचायत के सभी लोग उस पेड़ के पास आ पहुँचे। न्यायाधीश ने पेड़ से पूछा– हे वनदेवता! आप इस वन में निवास करते हैं हर पेड़ में आपका वास है। आप ही सत्य बता सकते हैं, इस पेड़ के पास जो धन गड़ा है कौन ले गया है?

–धर्मबुद्धि।– पेड़ से आवाज आयी।

आवाज सुनकर धर्मबुद्धि चौंका। उसे आवाज परिचित सी जान पड़ी। उसे कुछ गड़बड़ी नजर आयी। एक क्षण उसने गंभीर हो सोचा तो उसे बात कुछ समझ में आ गयी। मगर वह अन्जान बना रहा।

अब न्यायाधीश की निगाह धर्मबुद्धि पर पड़ी तो वह न्यायाधीश को हाथ जोड़ते हुए बोला– मैं एकदम निर्दोष हूँ। न्यायाधीश हँस दिये व बोले– ठहरो! अब अग्नि से पूछा जाएगा, जाओ लकड़ियां इकट्ठी करो।

धर्मबुद्धि ने झट सूखी लकड़ियां पेड़ के पास इकट्ठी कीं। फिर उसमें आग लगा दी। धुआँ उठा। पूरा पेड़ धुआँ से भर उठा। कुछ ही देर में पेड़ की खोह से एक आदमी निकलकर भागा। सबने उसे देखा। किसी ने उसे पकड़ा वह पापबुद्धि का बाप था। धुएँ से उसकी हालत खराब हो गयी थी। जब उससे पूछताछ हुई तो पता चला कि सारी करतूत पापबुद्धि की ही थी। सबको सच्चाई मालूम हो गयी। न्यायाधीश ने पापबुद्धि और उसके बाप को सजा दी। धर्मबुद्धि के हिस्से का धन भी पापबुद्धि से उसे मिल गया।

न्यायाधीश बोला– भला कहीं पेड़ भी बोलते हैं। परन्तु चोर हमेशा अन्धा होता है। मुझे पता था जो भी चोर होगा वह पेड़ की आवाज अवश्य निकालेगा। तब हम धुआँ करेंगे। बस वही तरकीब काम आ गई और सच्चाई का पता चल गया। सच्चाई जीत गयी।

आलेख (स्वास्थ्य) : राजकुमार जैन

एक पौष्टिक फल : बेल

बेल गर्मियों में सब्जीमण्डी में बहुतायत से आने वाला एक बहु-उपयोगी और पौष्टिक फल है जो गर्मी के मौसम में स्वस्थ रहने में हमारी मदद करता है। बेल स्वाद में एक रुचिकर और स्वादिष्ट फल है। आयुर्वेद में बेल को स्वास्थ्य के लिए काफी लाभप्रद फल माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार पका हुआ बेल मधुर, रुचिकर और पाचक तथा शीतल फल है तथा कच्चा बेल फल रुखा, पाचक, गर्म, वात, कफ, शूलनाशक व आंतों के रोगों में उपयोगी होता है। बेल का फल ऊपर से कठोर होता है तथा इसमें पर्याप्त मात्रा में बीज होते हैं। इसके गूदे में एक खास प्रकार की मनमोहक सुगंध होती है। बेल के फल को ताजा सेवन करने के अलावा सुखाकर भी उपयोग में लिया जाता है। इसे संस्कृत में 'बिल्व' तथा हिन्दी में 'बेल' अथवा 'बेलुझा' कहा जाता है। भारत में बेल का वृक्ष काफी पवित्र माना जाता है। बेल भारत का एक प्राचीन वृक्ष है। इसका जिक्र 'यजुर्वेद' में भी मिलता है। बेल का वृक्ष पूरे भारत में, खासतौर पर हिमालय की तराई में, सूखे पहाड़ी क्षेत्रों में 5000 फीट की ऊँचाई तक पाया जाता है।

बेल के फल के सौ ग्राम गूदे का रासायनिक विश्लेषण इस प्रकार है– नमी 61.5 प्रतिशत, वसा 0.3 प्रतिशत, प्रोटीन 1.8 प्रतिशत, फाइबर 2.9 प्रतिशत, कार्बोहाईड्रेट 31.8 प्रतिशत, कैल्शियम 85 मिलीग्राम, फास्फोरस 50 मिलीग्राम, आयरन 0.6 मिलीग्राम, विटामिन सी 2 मिलीग्राम। इनके अतिरिक्त बेल में 137 कैलोरी ऊर्जा तथा कुछ मात्रा में विटामिन बी भी पाया जाता है। इस प्रकार बेल के इस रासायनिक विश्लेषण से भी इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि यह काफी स्वास्थ्यप्रद फल है।

उदर-विकारों में बेल का फल रामबाण दवा है। वैसे भी अधिकांश रोगों की जड़ उदर-विकार ही है। बेल के फल के नियमित सेवन से कब्ज जड़ से समाप्त हो जाती है। कब्ज के रोगियों को इसके शर्बत का भी नियमित सेवन करना चाहिए। बेल का पका हुआ फल उदर की स्वच्छता के अलावा, आंतों को भी साफ कर उन्हें ताकत देता है।

मधुमेह के शिकार लोगों को भी बेल के फल का नियमित सेवन करना चाहिए। इसके अलावा मधुमेह के रोगी को बेल की पत्तियों का रस दिन में दो बार सेवन करना चाहिए। एक माह तक नियमित सेवन से डाइबिटीज की बीमारी में काफी राहत महसूस होगी।

रक्ताल्पता में पके सूखे बेल की गिरी का चूर्ण बनाकर गर्म दूध में मिश्री के साथ इस पाउडर का एक चम्मच प्रतिदिन सेवन करें। इससे शरीर में नये रक्त का निर्माण होगा और स्वास्थ्य लाभ होगा।

गर्मियों में प्राय: अतिसार की वजह से पतले दस्त होने लगते हैं। ऐसी स्थिति में कच्चे बेल को आग में भूनकर उसका गूदा रोगी को खिलाएं।

गर्मियों में लू लगने की स्थिति में बेल के ताजे पत्तों को पीसकर मेंहदी की भांति पैरों के तलुओं पर भली प्रकार मलें। इसके अलावा सिर, हाथ, छाती पर भी इसकी मालिश करें। रोगी को बेल का मिश्री शर्बत भी पिलाएं। वह जल्दी राहत महसूस करेगा।

बुखार होने पर बेल की पत्तियों के काढ़े का सेवन लाभप्रद है। यदि मधुमक्खी, बर्र अथवा ततैया ने काट लिया है तो भारी जलन होती है। ऐसी स्थिति में बेलपत्र का रस कटे हुए स्थान पर लगाने से राहत मिलती है तथा जलन व सूजन भी कम पड़ जाती है। बेल की पत्तियों का रस पीने से श्वास-रोग में काफी लाभ होता है। मुँह में गर्मी के कारण यदि छाले हो गये हैं तो बेल की पत्तियों को मुँह में रखकर चबाएं।

बवासीर आजकल एक आम बीमारी हो गई है। खूनी बवासीर तो बहुत ही तकलीफ देने वाला रोग है। बेल की जड़ का गूदा पीसकर बराबर की मात्रा में मिश्री मिलाकर उसका चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सुबह-शाम लें। लेकिन यदि पीड़ा अधिक है तो दिन में तीन बार लें। इससे बवासीर में काफी लाभ होगा। यदि किसी कारण से बेल की जड़ें उपलब्ध न हो सके तो कच्चे बेलफल का गूदा, सौंफ और सौंठ मिलाकर उसका काढ़ा बनाकर सेवन करना भी लाभ पहुँचाएगा। यह प्रयोग कम से कम एक सप्ताह करें।

इस तरह सुस्पष्ट है कि बेल चमत्कारिक औषधि फल है। चरक संहिता में कहा गया है– ''रोगानि विलत्ति मिनतित्त बिल्व:'' अर्थात रोगों को जड़ से खत्म करने की अद्‌भुत क्षमता के कारण ही 'बेल' को 'बिल्व' कहा गया है। समुचित स्वास्थ्य लाभ हेतु बेल का नियमित सेवन कीजिए।

जानकारी : जयेन्द्र

पक्षियों को पंख संवारने से मिलती है शक्ति

पक्षी दिनभर के सफर में अपने पंखों को 4-5 बार चोंच से कुरेदकर संवारते हैं, फिर पंखों को फड़फड़ाते हैं और तेजी से उड़ान भरने लगते हैं। दरअसल चोंच से पंखों को कुरेदने से उनकी शारीरिक थकान दूर होती है तथा शरीर में स्फूर्ति आती है, पंख कुरेदना पक्षियों का एक व्यायाम भी है।

साइबेरिया के पक्षीशास्त्री जेमस थाप ने पक्षियों पर कई तरह के शोध किये हैं। उन्होंने दुनिया के कई जंगलों के भिन्न-भिन्न पक्षियों को देखा है। सभी पक्षियों में उन्होंने जो खास बात देखी वह है– चोंच से पंखों को कुरेदना।

जेमस थाप के एक शोध के अनुसार प्रत्येक पक्षी की पीठ पर पूंछ के निकट तैलीय ग्रंथियां होती हैं। जब पक्षियों की चोंच इन ग्रंथियों को कुरेदती है तो प्राकृतिक तेल की मात्रा पंखों पर फैल जाती है। यह प्राकृतिक तेल पंखों को साफ रखने के साथ-साथ चमकदार भी बनाता है। इस तेल के कारण पक्षियों के पंखों पर पानी का असर नहीं हो पाता।

चील और बाज अपने पंख रेत के ढेर पर बैठकर संवारते हैं। यदि रेत नहीं मिलती तो वे मिट्टी के ढेर पर बैठकर चोंच से पंख संवारने लगते हैं। दरअसल उन्हें जब तक रेत मिट्टी की खुशबू नहीं मिलती उनका दिमाग प्रसन्न नहीं होता। यह खुशबू मिलते ही वे अपने पंखों को एक खुशी के साथ संवारने लगते हैं। बत्तख पानी में डुबकी लगाकर अपने पंखों को साफ करती है। मुर्गा किसी पेड़-पौधे या दीवार के सहारे अपनी चोंच से पंख कुरेदता है तथा इसी तरह वह शरीर में ताजगी स्फूर्ति की पूर्ति करता है।

कुछ पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार– पक्षी अपनी चोंच पंखों पर मारते हैं तो तेल की कुछ मात्रा चोंच के द्वारा इनके मुँह में चली जाती है। हाँ, यह तेल विटामिन 'डी' के रूप में उनके शरीर को शक्ति प्रदान करता है। वैसे इस तेल के कारण पक्षियों के पंखों पर पानी का असर भी नहीं हो पाता। इसी कारण पक्षी वर्षा के मौसम में भी उड़ने लगते हैं और उनके पंखों पर पानी की बूंदों का कोई असर नहीं होता। दरअसल यह तेल बरसात में उनके लिए 'रेनकोट' का कार्य भी करता है।

मूली

हरे भरे पत्तों की होती,
जड़ सफेद मूली की।
खाने में पाचक होती है,
जो पसन्द जूली की।।

लहसुन

लहसुन गुणकारी होता है,
खाओ खून साफ होता है।
सर्दी का तो दुश्मन है,
इसीलिये प्रिय जन जन है।।

मूंगफली

देशी मेवा सच्ची होती,
कच्ची बच्चों मूंगफली।
भून-भूनकर गुड़ संग इसको,
खाओ बच्चों मूंगफली।।

तुरई

हरी तुरई लम्बी धारी सी,
बड़ी विटामिन होती है।
खाती गुड़िया इसकी सब्जी,
गीत उसी के गाती है।।

कहानी : सुकीर्ति भटनागर

सुबह का भूला

शानू गिलहरी का एक बेटा था, चिंकी। एक दिन वह मिकू बन्दर के बाग में गया। वहाँ लगे अनार के पेड़ पर जा बैठा व मीठे-मीठे रसभरे अनार के दाने खाने लगा। तभी उसकी नजर टहनियों के बीच लटके एक घोंसले पर पड़ी। ''अरे वाह कितना सुन्दर घोंसला है। इसे तो मैं अपने कमरे में सजाऊँगा।'' उसने सोचा और चुपके से घोंसले को टहनी से उतार कर रफूचक्कर हो गया।

सोन चिड़ा और मिनी चिड़िया दोनों ही उस समय दाना चुगने गए हुए थे। जब वे थके मांदे लौटे तो पेड़ पर घोंसले को न देख चिन्ता में डूब गए। चिड़े ने आसमान की ओर देखा। सारा आकाश बादलों से ढका हुआ था। किसी भी समय वर्षा शुरू हो सकती थी। उदास मन से वे घोंसले की तलाश में उड़ चले।

रास्ते में उन्हें भूरा भालू दिखाई दिया।

–भूरे, क्या तुमने हमारा घोंसला देखा है।– चिड़े ने पूछा।

–नहीं तो।– इतना कहकर भूरा भी उनके साथ घोंसला ढूंढने चल पड़ा। मिकू बन्दर उस समय नदी से नहाकर लौट रहा था। जब उसने चिड़े की बात सुनी तो वह भी उनके साथ हो लिया। कुछ ही देर में कई पशु-पक्षी चिड़े के साथ घोंसला ढूंढने चल पड़े। शानू गिलहरी उस समय घर की सफाई कर रही थी। उसके घर के सामने से निकलते हुए भूरे ने उससे भी चिड़े के घोंसले के बारे में पूछा तो शानू को एकाएक चिंकी के कमरे में लटके घोंसले का ध्यान हो आया। तब सबको वहीं रूके रहने को कह वह अन्दर से घोंसला उठा लाई।– कहीं यह तो नहीं है वह घोंसला। शानू ने चिड़े और चिड़िया से पूछा तो वे दोनों खुशी से चहचहा उठे। उन्हें खुश देख अन्य सभी पशु-पक्षी भी प्रसन्नता से बाग की ओर चल पड़े। बाग में पहुँचते ही मिकू बन्दर ने घोंसले को पेड़ की एक मजबूत डाल पर टांग दिया।

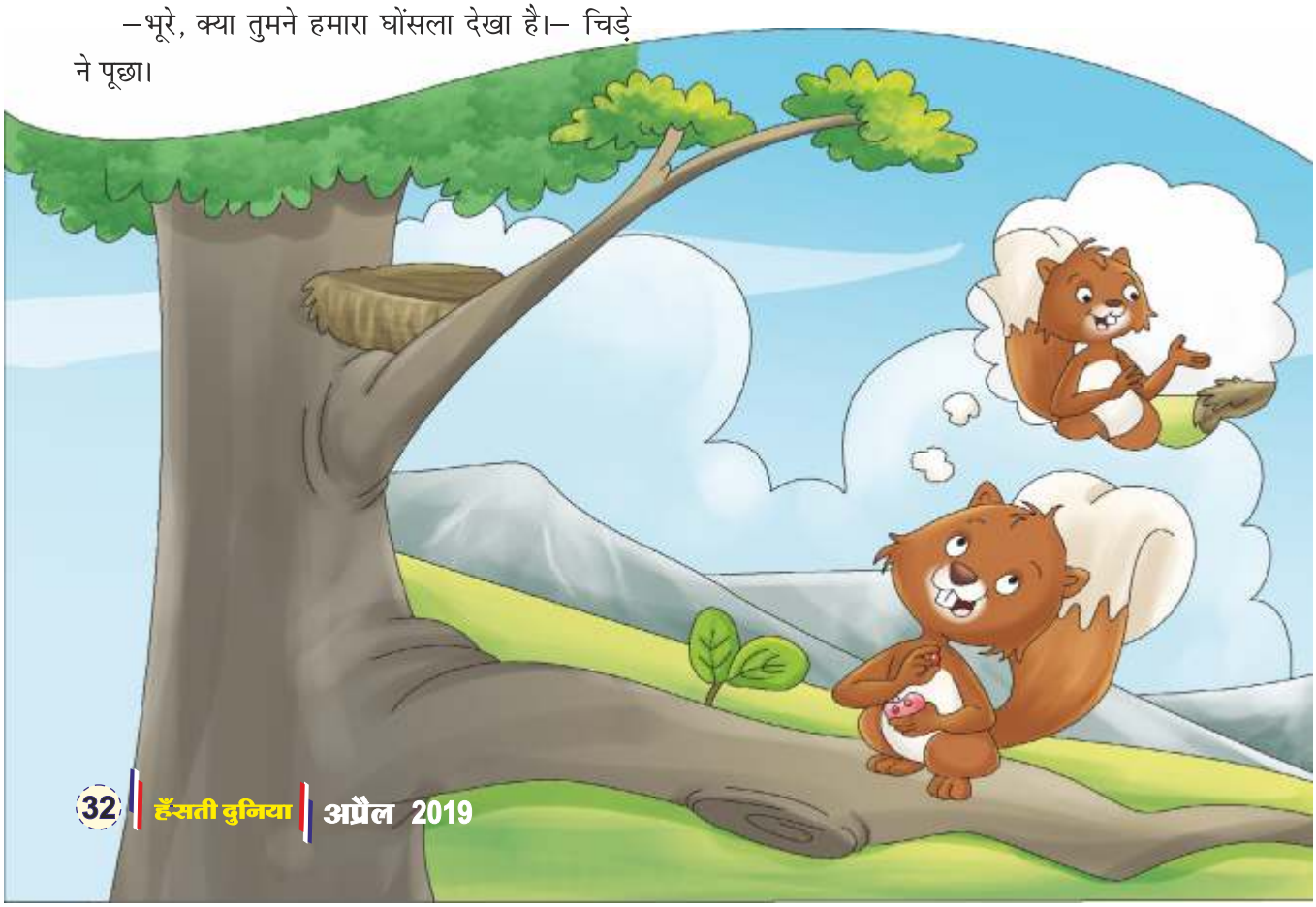

तब मिकू का धन्यवाद कर दोनों पक्षी अपने घोंसले में जा दुबके और सुख की सांस ली क्योंकि अब तक बाहर पानी बरसने लगा था।

शाम को चिंकी जब स्कूल से लौटा तो अपने कमरे में घोंसले को न पाकर उदास हो गया।

–माँ, मेरा घोंसला कहाँ है?

–अरे वाह, वह घोंसला तुम्हारा कब से हो गया, वह तो सोन चिड़ा और चिड़िया का था इसलिए वे हमारे घर आए और अपना घोंसला लेकर चले गए।– शानू ने कहा।

–पर माँ मैंने उस घोंसले में तो मैंने अपने जेब खर्च में से बचाए सारे रुपये रख दिए थे। अब हो गया न मेरा नुकसान।– चिंकी रोते हुए बोला।

तभी सोन चिड़ा वहाँ पहुँचा और चिंकी के पैसे लौटाते हुए कहने लगा– बेटा, प्रत्येक जीव अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए अपनी आवश्यकतानुसार कोई न कोई साधन जुटाता है। किन्तु यदि किसी कारण से उसके वे साधन नष्ट हो जाएं या जमा पूंजी लुट जाए तो उसे बहुत दु:ख होता है, जैसे अपने पैसे न पाकर तुम्हें हुआ। हमने भी तिनका-तिनका जोड़कर अपना घोंसला बनाया था। उसके न मिलने पर हमारा और हमारे बच्चों का इस बरसाती मौसम में क्या हाल होता इसका अंदाजा अब तुम भली प्रकार लगा सकते हो।

चिड़े की बात सुन चिंकी बहुत लज्जित हुआ और सोन चिड़े से माफी मांगने के लिए उनके पैरों में झुक गया।

अंकल प्लीज मुझे माफ कर दें, अब मैं भविष्य में कभी भी अपनी खुशी के लिए किसी दूसरे का नुकसान नहीं करूंगा।

उसकी बात सुन सोन चिड़े ने कहा– मुझे खुशी है चिंकी कि तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो गया है। वैसे भी सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मौली और किट्टी देखो ... मैं तो इस टहनी तक पहुँच गया और आराम से कूदकर नीचे भी उतर जाऊँगा।
वाह चिंटू ... बहुत बढ़िया ...
अब मोंटू की बारी ... मैं सबके बाद और सबसे ऊपर चढ़कर दिखाऊँगी ... और पहले स्थान पर आऊँगी।
अरे वाह मोंटू तुमसे ऊपर तो किट्टी भी नहीं चढ़ पाएगी ... बेचारी किट्टी ... हा ... हा.... हा!!

देखो मौली ... देखो.. देखो! मोंटू और चिंटू तुम भी देखो ... मैंने कहा था ना कि मैं ही जीतूँगी। या ... हू ... उ ...
अरे वाह! क्या खूब!! किट्टी तुमने तो कमाल कर दिया ... सच में तुम बहुत बहादुर हो।
आह! मेरा पैर ... पेड़ से गिर कर मेरे पैर पर चोट आ गई। कोई मम्मी को बुला लाओ मैं खड़ी नहीं हो पा रही।

किट्टी बेटा ... क्या हुआ? ... मैंने तुम्हें कहा था ना कि शरारत मत करना ... देखा बात न मानने का नतीजा।
लो किट्टी बेटा, जूस पी लो ... तुम्हें कितनी बार कहा है कि शरारत मत किया करो, देखो लग गई ना चोट ...।
सॉरी मम्मा आगे से ध्यान रखूँगी। आपकी हर बात मानूँगी।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी), गौरव गुप्ता (माधोगंज, हरदोई)

क्या आप जानते हैं?

★ एल्बैट्रॉस बिना अपने पंख फड़फड़ाए हवा में 6 दिन तक लगातार उड़ता रह सकता है। मजे की बात यह भी कि उड़ते-उड़ते ही झपकियां भी मार सकता है।

★ जिराफ प्रतिदिन आधे घंटे की नींद लेते हैं।

★ कॉक्रोच सिर कटने के बाद भी नौ दिनों तक जिन्दा रह सकता है।

★ तितली अपने पैरों से स्वाद चखती है।

★ जब भी चांद हमारे सिर पर होता है। उस समय हमारा वजन कुछ कम हो जाता है।

★ जब गेंडे उदास होते हैं तो उसके पसीने का रंग लाल हो जाता है।

★ मच्छरों के 47 दांत होते हैं।

★ चिम्पांजी 300 किस्म के इशारे समझ लेता है।

★ चार दिन का सप्ताह तिब्बत में मनाया जाता है।

★ चूहे बिना पानी पिये ऊँट से ज्यादा समय तक जीवित रह सकते हैं।

★ एक वयस्क मानव की जांघ की हड्डी कंक्रीट से ज्यादा मजबूत होती है।

★ कैटफिश के 27 हजार स्वाद तन्तु होते हैं।

★ दुनिया की सबसे गहरी खदान ईस्ट रैड माइन है। जिसकी गहराई 3585 मीटर है।

★ दुनिया का सबसे छोटा युद्ध इंग्लैंड और जांजीबार के बीच वर्ष 1896 का था जिसमें जांजीबार ने 38 मिनट में समर्पण कर दिया था।

★ फरवरी 1865 और फरवरी 1999 दर्ज इतिहास में दो ही ऐसे माह रहे हैं जब पूर्ण चन्द्र दिखाई नहीं दिया था।

★ आपको जानकर आश्चर्य होगा कि टेलीफोन का आविष्कार करने वाले एलेक्जेण्डर ग्राहमबेल कभी अपनी माँ और पत्नी से फोन पर बात नहीं कर पाए क्योंकि वे दोनों सुन नहीं सकती थीं।

★ माँ चमगादड़ के सुनने की क्षमता इतनी तीव्र होती है कि लाखों बच्चों के बीच में से किस बच्चे ने उसे पुकारा, वह सुनकर तुरन्त पहचान लेती है।

★ अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में डकार नहीं ले सकते।

★ घोंघे के चौदह हजार से भी अधिक दांत होते हैं।

★ टिड्डे की टांगें शरीर से अलग हो जाने पर भी चलती रह सकती है।

★ जिराफ की गर्दन में मनुष्य की तरह ही सात हड्डियां होती हैं।

★ कंगारू उल्टा नहीं चल सकता है।

★ अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में डकार नहीं ले सकते।

★ घोंघे के चौदह हजार से भी अधिक दांत होते हैं।

★ बिल्लियां अल्ट्रासाउंड को सुन सकती है।

दो बाल कविताएं : अशोक जैन

खूब हँसाता पेड़

बादल धरती पर बरसाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

हम बच्चों के मन को भाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

हानिकर गैसें खुद पी जाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

शुद्ध हवाओं का यह दाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

पतझड़ में पीला पड़ जाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

वर्षा में फिर खिल-खिल जाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

बच्चों में अपनापन पाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

जब भी मिलता खूब हँसाता,
हरा-भरा मुस्कुराता पेड़।

बाधाओं से न घबराएं

नदी किनारे बैठके हम भी,
कल-कल गीत सुनाएं।
कैसी भी हों बाधाएं,
पर नहीं तनिक घबराएं।

कांटों के भी बीच खिलें,
फूलों-सा मुस्काएं।
और हवा के संग-संग,
हम खुशबू खूब लुटाएं।

जीवन तो वरदान सृष्टि का,
नेह-सुधा बरसाएं।
रंग-बिरंगे तितली सरीखे,
सपनों में खो जाएं।

बाल कहानी : डॉ. परशुराम शुक्ल

पिता की सीख

दाताराम के तीन बेटे थे। राजन, मदन और देव। तीनों भाइयों की प्रकृति में जमीन-आसमान का अन्तर था। बड़ा बेटा राजन स्वच्छ, साफ, शानदार स्थान पर रहना पसन्द करता था। उसकी इच्छा थी कि वह बड़ा होकर नगर में आलीशान बंगला बनवाये। मंझले बेटे मदन को अच्छी-अच्छी चीजों के संग्रह करने का शौक था। छात्र जीवन में उसने अनेक बहुमूल्य वस्तुएं खरीद ली थीं। मदन की इच्छा थी कि वह जल्दी बड़ा होकर फ्रिज, टी.वी., कार आदि सुविधा की सभी चीजें प्राप्त कर ले। सबसे छोटा देव मस्तमौला था। उसे न घर की चिन्ता थी न बहुमूल्य वस्तुओं के संग्रह का शौक, देव को चिन्ता थी तो बस पेट की। वह खूब तर-माल खाता था और नियमित व्यायाम करता था। उसने अपने भविष्य के बारे में कुछ सोचा ही नहीं था।

दाताराम अपने तीनों बेटों के अलग-अलग स्वभाव के कारण बड़ा दु:खी था। उसने उन्हें बहुत समझाया लेकिन किसी ने वृद्ध पिता की बातों पर ध्यान नहीं दिया। अपने अन्तिम समय पर दाताराम ने तीनो बेटों को बुलाया और कहा– मेरे बच्चों, तुम तीनों बहुत अच्छे हो। तुम अलग-अलग उद्देश्यों वाले होते हुए भी सुखी रह सकते हो। बस एक बात का ध्यान रखना हमेशा एक-साथ मिलजुलकर रहना।

तीनों बेटों ने हमेशा की तरह वृद्ध दाताराम की नसीहत पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उसकी मृत्यु के बाद अपनी पैतृक जमीन-जायदाद को बेचकर रुपयों का हिस्सा बांट लिया और अपने-अपने हिस्से की रकम लेकर शहर चले गये।

दैव योग से उन्हें शहर में काम मिल गया तथा वे अपने-अपने काम में लग गये। अब उनके पास एक-दूसरे से मिलने का समय नहीं था।

धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गये। इस बीच तीनों की शादियां हो गयीं तथा वे परिवार वाले हो गये। राजन का उद्देश्य एक शानदार बंगला था। अत: उसने शहर आते ही एक शानदार बंगला बनवाया। किन्तु इसमें उसका इतना धन लग गया कि वह अपनी आवश्यकता की कोई भी अन्य चीज नहीं खरीद सका था।

दूसरा भाई मदन एक किराये के मकान में शान से रह रहा था। उसके पास फ्रिज, टी.वी., कार आदि सभी सुख-सुविधाओं की चीजें थीं। उसकी पत्नी तथा बच्चे बहुत खुश थे, लेकिन कभी-कभी मदन परेशान हो जाता। जिस मकान में वह रहता था वह इतना पुराना था कि बरसात में उसकी छतें टपकती थीं। जिससे उसकी बहुमूल्य वस्तुएं खराब हो जाती थीं। उसका भी पूरा धन बहुमूल्य वस्तुओं की खरीदारी में ही समाप्त हो चुका था।

तीसरे भाई देव के पास न अपना घर था और न ही ऐशो-आराम की बहुमूल्य वस्तुएं। किन्तु वह अपने दोनों भाइयों से अधिक सुखी और प्रसन्न था। उसका शरीर इतना स्वस्थ और शक्तिशाली था कि

आस-पास के लोग उससे भय खाते थे। शक्तिशाली होने के कारण देव दादागिरी भी करने लगा था। वह किसी से भी कुछ उधार लेता तो कभी न लौटाता। उसकी दादागिरी से डरकर लोग चुप रह जाते। एक बार एक दुकानदार अपनी उधारी लेने उसके घर पहुँच गया। देव को यह बड़ा अपमानजनक लगा। उसने हमेशा की तरह दुकानदार से झगड़ा करने लगा।

दुकानदार भी हृष्ट-पुष्ट था। वह देव से भिड़ गया। परन्तु देव ने उसे खूब पीटा और भीड़ एकत्रित हो गयी। बेचारा दुकानदार खून से लथपथ हो गया। इसी समय पुलिस आ गयी और देव को हवालात में बन्द कर दिया गया।

देव के हवालात में बन्द होते ही उसे नौकरी से निकाल दिया गया। इसी मौके का फायदा उठाकर देव के मकान मालिक ने भी उसका सामान घर के

बाहर कर दिया। उसने पिछले कई महीनों से मकान का किराया नहीं दिया था।

देव ने कभी कुछ बचाया था नहीं। अत: उसके परिवार वालों की भूखों मरने की नौबत आ गयी। वे घर से बेघर हो गये।

अचानक देव को राजन और मदन की याद आयी। उसने अपनी पत्नी को बुलाया तथा मदद के लिए अपने बड़े भाइयों के पास भेजा।

राजन और मदन मन के बड़े अच्छे थे। उन्होंने देव की पत्नी और बच्चों को घर में आश्रय दिया तथा तुरन्त थाने जाकर देव को छुड़वाया। देव अब राजन के पास रहने लगा।

देव और उसकी पत्नी व बच्चे राजन के पास बहुत खुश थे। राजन का बंगला वास्तव में शानदार था। उसमें कई कमरे थे। देव और उसकी पत्नी व बच्चे कभी-कभी मदन के पास भी चले जाते थे। मदन के पास कार में घूमते और रोज टी.वी. देखते लेकिन मदन का घर अच्छा नहीं था।

देव सामान्य बुद्धि का था। लेकिन उसे बार-बार पिता की नसीहत याद आती 'हमेशा मिलकर साथ रहना।' वह सोचता 'काश! हम तीनों भाई एक-साथ रहते तो सभी कितने सुखी हो जाते।'

देव के कारण राजन और मदन का भी एक-दूसरे के घर आना आरम्भ हो गया। जब तीनों भाई और उनके परिवार वाले एक-साथ एकत्रित हो जाते तो ऐसा लगता मानो कोई त्योहार हो। बच्चे तो विशेष रूप से काफी खुश थे।

धीरे-धीरे राजन और मदन को भी पिता की नसीहत याद आने लगी।

दोनों भाई एक-साथ रहना चाहते थे किन्तु संकोच के कारण एक-दूसरे से कहने में हिचक रहे थे। तभी एक दुर्घटना हो गयी।

बरसात के दिन थे। एक दिन तेज पानी बरसा। मदन का घर बहुत पुराना था। बारिश से उसके मकान का आधा भाग गिर गया। ऐसा लगता था मानो कभी भी पूरा घर धराशायी हो सकता है। मदन का कीमती सामान पानी से भीगने लगा।

इसी समय राजन आ गया। उसने मदन के सामान की दुर्दशा देखी तो उससे रहा नहीं गया। राजन बोल पड़ा– मदन उठो, अपने घर चलो सारा सामान लेकर। हम तीनों भाई एक-साथ रहेंगे। तुम्हें याद है हमें पिताजी ने अन्तिम समय यही नसीहत दी थी। लेकिन हम लोग उनकी बात भूल गये। इसीलिए हमें इतने कष्ट उठाने पड़े।

–हाँ भैया, चलो अभी चलते हैं। अब हम तीनों हमेशा एक-साथ रहेंगे।– कहते हुए मदन राजन से लिपट गया। देव दूर खड़ा उनका मिलन देख रहा था। अब उन्हें किसी का डर न था। घर, ताकत, धन आदि सभी कुछ तो था उनके पास। आज उन्हें पिता जी की कही बातें समझ आ रही थीं कि मिलजुल कर रहने में कितनी भलाई है।

रोचक जानकारी : कमला देवड़ा

जल-मुर्गी

बच्चों! तुमने जल-मुर्गी का नाम तो सुना होगा। ये पानी में रहती है। नर-मादा दोनों का रंग एक-सा होता है।

कहीं-कहीं यह मुर्गी केम, कर्मा और बोदरी के नाम से भी जानी जाती है। यह एक बहुत ही सुन्दर पक्षी है।

जल-मुर्गी तैरना बहुत जानती है। इसके छिपने की कला देखकर तो सब दंग रह जाते हैं। थोड़ा-सा कोलाहल होते ही तालाबों के पौधों के बीच छिप जाती है।

जल-मुर्गी समूह में रहती है। तालाबों में रहना और तैरना इन्हें बहुत पसन्द है।

इनका मुख्य भोजन घास के पत्ते हैं। ये अनाज के पौधों को बहुत नुकसान पहुँचाती है।

प्राय: मई-जून में मादा मुर्गी अंडे देती है। इनके अंडों पर काले और कत्थई चित्ते पड़े होते हैं।

यदि आपके आसपास तालाब हो तो नजर डालने पर जल मुर्गी अवश्य दिखाई देगी।

पढ़ो और हँसो

पिता : (पुत्र से) तुम इतिहास में फेल क्यों हुए?
पुत्र : पिता जी, मैं क्या करूं, सभी प्रश्न उस समय के पूछे गये थे जब मैं पैदा भी नहीं हुआ था।

पिता : (पुत्र से) बेटा प्रश्न-पत्र कैसा था?
पुत्र : जी, लाल रंग का था।

अजय : ऐसी कौन-सी कली है जो कभी नहीं खिलती?
विजय : छिपकली।

एक आदमी : थानेदार जी, किसी ने मेरी जेब काट ली।
थानेदार : (चिल्लाकर) फिर यहाँ क्यों आया, दर्जी के पास क्यों नहीं जाता।

एक दुकानदार भिखारी से बोला– क्यों रोज-रोज काम के समय आ जाते हो।
भिखारी : फिर महीना क्यों नहीं बांध लेते।

सुरेश : मेरे भैया बचपन में बहुत ताकतवर थे।
सुशील : तुम्हें कैसे पता?
सुरेश : मेरी मम्मी कहती है कि जब भइया रोते थे तो सारा घर सर पर उठा लेते थे।

– नरेश सिहाग (भिवानी)

एक औरत के पति का नाम मक्खनलाल था। उसकी बहू दही मथ रही थी। जब मक्खन ऊपर आया तो बहू ने कहा– माँ जी, मटके में मक्खन तैयार है।
सास ने झिड़क कर कहा– ससुर का नाम लेते तुम्हें शर्म नहीं आती।
बहू ने तुरन्त कहा– क्षमा कीजिए माताजी, देखिए मटके में पिताजी तैयार हैं।

ग्राहक : मुझे इस होटल में एक हफ्ता पहले आ जाना चाहिए था।
मैनेजर : (खुश होकर) यह तो आपकी जर्रानवाजी है साहब। आपको यहाँ का खाना काफी पसन्द आया।
ग्राहक : नहीं, बात यह है कि जो खाना मैंने अभी खाया है, वह उस समय ताजा तो होता।

टी.टी. : तुम्हें पता नहीं बिना टिकिट ट्रेन में बैठना गुनाह है।
यात्री : मुझे पता है, इसलिए तो मैं खड़ा हूँ।

– रत्नेश मिश्रा (वापी)

पिता : (पुत्र से) बेटे, तुम्हारे स्कूल में प्रतियोगिता होने वाली है तुम उसमें जरूर भाग लेना।

बेटा : ठीक है पिताजी; जैसे ही प्रतियोगिता शुरू होगी मैं भाग आऊंगा।

–बेटे, क्या नाम है आपका?

–जी, बबलू!

–यह तो घर का नाम है, मैंने तो आपके स्कूल का नाम पूछा है?

–एम.आर.वी. मॉडल स्कूल।– बच्चा बोला।

माधुरी : चलो सीमा तैरने चलें।

सीमा : माधुरी मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक तैरना न सीख लूँगी पानी के पास तक नहीं जाऊँगी।

एक लड़का रास्ते में खड़ा रो रहा था। एक व्यक्ति ने पूछा– बेटे क्यों रो रहे हो?

–मेरा पांच रुपया खो गया है। घर जाते ही माँ मारेगी।– लड़का बोला।

उस दयालु व्यक्ति ने अपनी जेब से पांच रुपया निकालकर देते हुए कहा– लो अब चुप हो जाओ।

लेकिन लड़का और भी जोर से रोने लगा तो व्यक्ति ने फिर पूछा– क्यों बेटा, अब क्यों रो रहे हो?

लड़का बोला– माँ डांटेगी कि तुमने दस रुपये के लिए क्यों नहीं कहा।

– प्रवीन (मुम्बई)

रामू : सर, मेरे घर में टीवी को छोड़कर बाकी सबकुछ चोरी हो गया है।

इंस्पेक्टर : चोर ने सिर्फ टीवी किसलिए छोड़ा होगा?

रामू : मुझे क्या पता सर! मैं उस समय टीवी पर फिल्म देख रहा था।

हैप्पी : लोग कहते हैं कि दिन में देखे सपने सच नहीं होते, पर मेरा तो कल दिन का सपना सच हो गया।

बंटी : कैसे भला?

हैप्पी : कल दोपहर को मैं क्लास में सोते-सोते सपना देख रहा था कि सर मुझे पीट रहे हैं और अचानक मैं जागा तो पाया कि सचमुच मेरी पिटाई हो रही है।

एक बार एक कंजूस सेठ किराये की टैक्सी में बैठा जा रहा था कि अचानक ही टैक्सी ड्राइवर बोला– साहब! टैक्सी के ब्रेक फेल हो गये हैं।

इस पर सेठ जल्दी से बोला– अरे! ब्रेक फेल हो गये हैं तो क्या हुआ? पहले जल्दी से तुम टैक्सी का मीटर तो बन्द करो भाई।

– दिनेश राय (सन्त नगर, दिल्ली)

– संकलनकर्ता : जगातार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ बड़े काम करने के लिए आत्मविश्वास पहली अनिवार्यता है। – सैमुअल जॉनसन

★ परिश्रम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। – हितोपदेश

★ महान कार्यों को करने का एकमात्र तरीका यह है कि आप अपने काम से प्यार करें। – स्टीव जॉब्स

★ जैसे एक दीपक की रोशनी दूर तक फैलती है, उसी प्रकार इस संसार में भलाई बहुत दूर तक चमकती है। – शेक्सपीयर

★ मिलकर चलो, एक स्वर में मिलकर बोलो और अपने मनों में एक समान विचार रखो। – ऋग्वेद

★ ईश्वर दुनिया के हर कण में विद्यमान है और ईश्वर का रूप इंसानों में आसानी से देखा जा सकता है इसलिए इंसान की सेवा करना ईश्वर की सच्ची सेवा है। – रामकृष्ण परमहंस

★ हमारी प्रार्थना बस सामान्य रूप से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए होनी चाहिये क्योंकि ईश्वर जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है। – सुकरात

★ जो व्यक्ति संदेह करता है उसे कहीं भी खुशी नहीं मिलती। – श्रीमदभगवद्गीता

★ जीवन में लगातार पूछा जाने लायक और जरूरी सवाल है कि आप दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं। – मार्टिन लूथर किंग

★ मेरा दर्द किसी के हँसने की वजह हो सकता है पर मेरी हँसी किसी के दर्द की वजह नहीं होनी चाहिए। – चार्ली चैपलिन

★ बंदरगाह में खड़ा जलयान सुरक्षित होता है किंतु जलयान वहाँ खड़े रहने के लिए नहीं बने होते हैं। – थॉमस एक्विनास

★ यश त्याग से मिलता है, धोखे से नहीं। – प्रेमचंद

★ वह आदमी वास्तव में बुद्धिमान है जो क्रोध में भी गलत बात मुँह से नहीं निकालता। – शेख सादी

★ सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो। – अब्दुल कलाम

★ मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाता है। – चन्द्रशेखर आजाद

★ साहस, भय और आत्मविश्वास के बीच का जरिया है। – अरस्तु

★ क्षमा करना सबके बस की बात नहीं क्योंकि ये मनुष्य को बहुत बड़ा बना देता है। – स्वामी दयानंद सरस्वती

बाल कविता :
डॉ रामनिवास 'मानव'

वृक्षों का संवाद

वन में जब दो वृक्ष मिले,
बहुत दिनों के बाद,
दोनों में होने लगा,
अर्थपूर्ण संवाद।
मुंह एक ने था खोला,
और कुछ यूं वह बोला।।

दु:खी बहुत हूँ मित्र मैं,
क्या बतलाऊँ बात,
आये दिन करने लगा,
अब मानव उत्पात।
विपदा बड़ी भारी है,
चलती नित्य आरी है।।

सब कुछ दिया मनुष्य को,
पात और फल-फूल,
हमें काटकर वह करे,
लेकिन भारी भूल।
सुनायें हम कथा किसे?
बतायें अब व्यथा किसे?

तब बोला तरु दूसरा, सुन मेरे मनमीत,
स्वार्थ में डूबा मनुष्य, नहीं किसी से प्रीत।
यदि नहीं वह समझेगा,
फल वही सब भोगेगा।।

धरती पर सबसे बड़ा, लगें वृक्ष उपहार,
करते मानव का सदा, वृक्ष बड़ा उपकार।
जहाँ पर वृक्ष लगेंगे,
वहाँ पर जीव बचेंगे।।

फरवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **ऐश्वर्या** 12 वर्ष
95, उपासना इन्क्लेव,
पंडितवाड़ी, देहरादून (उत्तराखंड)

2 **यवनिका ठाकुर** 12 वर्ष
गाँव : भरमोटी कलां, पोस्ट : भरमोटी
जिला : हमीरपुर (हि.प्र.)

3 **कशिश सोनी** 12 वर्ष
76, कृष्ण नगर,
पानीपत (हरियाणा)

4 **महक नारायण** 9 वर्ष
36/11, जूही लाल कॉलोनी,
कानपुर (उ.प्र.)

5 **प्रेमप्रकाश** 13 वर्ष
वार्ड नं. 38, हरिजन बस्ती,
सरदार शहर, जिला : चुरू (राज.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

नेहा शर्मा (बकरोल, गुजरात),
तेजस्विनी शर्मा (काजी खेरा, कानपुर),
आन्वी तायल (द मॉल, भटिंडा),
सेफाली (सुरैला, बस्ती),
खुशी वधवा (नकोदर, जालंधर),
भूमि हंस, प्रथम हंस
(हरदेव नगर, दिल्ली),
समदृष्टि (रोहिणी, दिल्ली),
ध्रुव (रामनगर, वर्धा),
स्वीटी पाण्डेय (जगतदल, 24 परगना),
ध्रुव, मेहर (सिविल लाईन, श्रीगंगानगर),
आन्नदिता (वैशाली नगर, अजमेर),
रिया बंसल (करनाल),
भावी सचदेवा (मंडी डबवाली),
खुशवंत भोजवानी (वर्धमान नगर, नागपुर),
शिवराज खरटमोल (कलवा, ठाणे),
अनन्या कामरा (कुदासन, गाँधी नगर),
अलका (बंशीपुर, चन्दौली),
रोनित साधवानी (उल्हास नगर),
हर्षिता नागपाल (रांची),
नमनप्रीत सिंह (निरंकारी कॉलोनी, दिल्ली)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 अप्रैल तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जून अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया के हर लेख, कविताएं एवं कहानियां अच्छी लगती हैं।

जनवरी अंक मिला। इस अंक की वैसे तो समस्त कहानियां अच्छी थीं। परन्तु विशेषतौर पर 'सहृदय चिकित्सक' (सत्येन्द्र त्रिवेदी) तथा 'कछुआ जीत गया' (जसविन्दर शर्मा) प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद लगीं

– पारस (धायोडे)

मैं तथा मेरा परिवार हँसती दुनिया का नियमित पाठक है।

मुझे हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। इसमें 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के शब्दों की व्याख्या तथा 'कभी न भूलो' काफी शिक्षाप्रद एवं मार्गदर्शन करने वाले होते हैं। 'क्या आप जानते हैं' भी ज्ञानवर्द्धन का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त 'पढ़ो और हँसो' भी मनोरंजक होते हैं।

फरवरी अंक में मुझे 'संगति का प्रभाव' तथा 'सन्त की बात' कहानियां बहुत ही अच्छी एवं प्रेरक लगीं। कविताएं भी मौसम के अनुकूल हैं।

– प्रदीप कुमार (मोगा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ और मैं इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ। मैं और मेरे घर वाले इसका बेसब्री से इंतजार करते हैं। हम सब इसमें सबसे पहले और अनेक रोचक कहानियां पढ़ते हैं।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि ये पत्रिका दिन-दुगनी व रात चौगुनी उन्नति करे।

– वैभव पुण्ढीर (डांगोली बांगर)

चूहा-बिल्ली

बिल्ली बोली म्याऊं म्याऊं,
भूख लगी है किसको खाऊं?

चूहे राजा बाहर आजा,
दोनों मिलकर खेलें खेल।
तुम आगे और पीछे मैं,
आओ दौड़े जैसे रेल।।

चूहा बोला मौसी आओ,
पहले मिलकर खाना खाओ।
बिल्ली बोली न बाबा न,
खाकर तुम बाहर आ जाओ।।

चूहा समझ गया था चाल,
बोला बजाकर अपना गाल।
तुम तो मेरी प्यारी आंटी,
पहले बांधकर आओ घंटी।।

– साधिक मल्होत्रा (बीकानेर)

कछुआ

चले छमाछम कछुआ राजा।
गाए गीत दमादम बाजा।
यह धरती पानी का राजा।
चले टमाटम यह बिन बाजा।

चाल सलोनी, ढाल सलोनी।
करता फिर भी यह अनहोनी।
हरा दौड़ में खरहे तक को।
बन जाता यह धावक राजा।

– डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under Number 47388/88

Delhi Postal Regd. No.G-3/ DL(N)/186/2018-20
Licence No. U (DN)-21/2018-20
Licensed to post without Pre-payment

Read Nirankari Magazines and Motivate Others

Sant Nirankari **Ek Nazar** **Hansti**

Please contact for the membership of:
'Sant Nirankari', 'Hansti Duniya' (Hindi, Punjabi and English) and 'Ek Nazar' (Hindi/Punjabi) at
Patrika Vibhag, Nirankari Complex, Near Nirankari Sarovar, Nirankari Colony, Delhi-110009
011-47660200, E-mail: patrika@nirankari.org

Please Contact for the membership of:
Sant Nirankari, Hansti Duniya, Ek Nazar (Marathi) and Sant Nirankari (Nepali)

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

Please Contact for the membership of other languages' magazines as below:

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023
(Karnataka)

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

Seek blessings of Satguru Mata Ji by participating in the propagation campaign of Sant Nirankari Magazines.

Posted at NDPSO, Prescribed dates 10th & 11th. Date of Publication: 7th & 8th. Same Month